Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ   وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 7
अंक- 32

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12 मोहर्रम 1443 हिज्री कमरी, 28 सफ़र1401 हिज्री शम्सी, 11 अगस्त 2022 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا لَا تَجۡعَلۡنَا فِتۡنَۃً لِّلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا وَاغۡفِرۡ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ﴿۶﴾

(सूरः मुम्तहेना : 6)

(अनुवाद) हे हमारे रब! हमें उन लोगों के लिए परीक्षा मत दो जिन्होंने इन्कार किया और हे हमारे रब! हमें क्षमा कर दो, निश्चय ही तू सर्वशक्तिमान (और) सर्वज्ञ है।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने हाथ की कमाई खाते थे

(2072) हज़रत मिक़्दाम (बिन माद्दी करब) रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान का अपने हाथ की कमाई से खाना खाने से बढ़कर कोई खाना नहीं और अल्लाह तआला के नबी हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम अपने हाथ की कमाई ही खाया करते थे।

बुरे हालात वाले से नरमी करना और तंग-दस्त को मोहलत देना

(2077) नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन लोगों में जो तुम से पहले थे, मलायक ने जब एक शख़्स की रुह का स्वागत किया तो उन्होंने कहा क्या तू ने कोई नेक काम किया है? तो उसने कहा मैं अपने नौजवानों को यह हुक्म दिया करता था कि वे आसूदा हाल को मोहलत दिया करें और उससे दरगुज़र करें (हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने) फ़रमाया फ़रिश्तों ने भी इस से दरगुज़र किया। एक और रिवायत के अनुसार उसने कहा मैं आसूदा हाल से नरमी करता और तंग-दस्त को मोहलत देता था।

(2078) नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक व्यापारी था जो लोगों को क़र्ज़ पर माल दिया करता था। जब वह तंग-दस्त को देखता तो अपने नौजवानों को कहता उससे दरगुज़र करो, शायद अल्लाह तआला भी हम से दरगुज़र फ़रमाए। अतः अल्लाह-तआला ने उस से दरगुज़र फ़रमाया।

(बुख़ारी, भाग 4 किताब बियू, मुद्रित 2008 क़ादियान)

★ ★ ★

प्रत्येक बात कहने से पहले सोच लो कि इसका नतीजा क्या होगा, अल्लाह तआला की इजाज़त उसके कहने में कहाँ तक है जब तक यह न सोच लो मत बोलो, ऐसे बोलने से जो शरारत का बायस और फ़साद का मूजिब हो, न बोलना बेहतर है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

ज़बान से ही इन्सान तक़्वा से दूर चला जाता है। ज़बान से ही तकब्बुर कर लेता है और ज़बान से ही फ़रावनी सिफ़ात आ जाती हैं और इसी ज़बान की वजह से पोशीदा आमाल को दिखावे से बदल लेता है और ज़बान का ज़ियाँ बहुत जल्द पैदा होता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो शख़्स नाफ़ के नीचे के अंग और ज़बान को शर से बचाता है उस की बहिश्त का ज़िम्मेदार में हूँ। हरामख़ोरी इस क़दर नुक़्सान नहीं पहुंचाती जैसे झूठी बातें। इस से कोई यह न समझ बैठे कि हरामख़ोरी अच्छी चीज़ है। यह सख़्त ग़लती है, अगर कोई ऐसा समझे। मेरा मतलब यह है कि कोई शख़्स जो मजबूरी में सुअर खाले तो यह बात अलग है। लेकिन अगर वह अपनी ज़बान से ख़िंज़ीर का फ़तवा दे दे तो वह इस्लाम से दूर निकल जाता है। अल्लाह तआला के हराम को हलाल ठहराता है। उद्देश्य इस से मालूम हुआ कि ज़बान का व्यर्थ प्रयोग ख़तरनाक है। इस लिए मुत्तक़ी अपनी ज़बान को बहुत ही क़ाबू में रखता है। यस के मुँह से कोई ऐसी बात नहीं निकलती जो तक़्वा के ख़िलाफ़ हो। अतः तुम अपनी ज़बान पर हुकूमत करो, न यह कि ज़बानें तुम पर हुकूमत करें और अनाप शनाप बोलते रहो।

प्रत्येक बात कहने से पहले सोच लो कि उसका नतीजा क्या होगा।अल्लाह तआला की इजाज़त उसके कहने में कहाँ तक है। जब तक यह न सोच लो मत बोलो। ऐसे बोलने से जो शरारत का बायस और फ़साद का कारण हो, न बोलना बेहतर है, लेकिन यह भी मोमिन की शान से बईद है कि बात सच्चाई के इज़हार में रुके। इस वक़्त किसी मलामत करने वाले की मलामत और ख़ौफ़ ज़बान को न रोके। देखो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपनी नबुव्वत का ऐलान किया तो अपने पराए सबके सब दुश्मन हो गए परन्तु आपने एक दम-भर के लिए भी किसी की परवाह नहीं की यहां तक कि जब अबू तालिब आपके चचा ने लोगों की शिकायतों से तंग आकर कहा। उस वक़्त भी आपने साफ़ तौर पर कह दिया कि मैं उसके इज़्हार से नहीं रुक सकता। आपका इख़्तियार है, मेरा साथ दें या न दें। (मल् फ़ूज़त भाग प्रथम पृष्ठ 382 मुद्रित क़ादियान 2018)

★ ★ ★

क़ुरआन वाले कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी तरह के आदमी थे उनकी बात क्यों मानें जो क़ुरआन-ए-करीम में है वह मानेंगे

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम का फ़हम सबसे ज़्यादा दिया था, वह क़ुरआन-ए-करीम से जो अर्थ अख़ज़ करते थे हम नहीं कर सकते

हमारा यह हक़ है कि यह बेहस करें कि यह हदीस सही नहीं परन्तु यह नहीं कह सकते कि हदीस तो सही है परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़लती की, नऊज़ुबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल् नहल आयत : 90 وَیَوۡمَ نَبۡعَثُ فِیۡ کُلِّ اُمَّۃٍ شَہِیۡدًا عَلَیۡہِمۡ مِّنۡ اَنۡفُسِہِمۡ وَجِئۡنَا بِکَ شَہِیۡدًا عَلٰی ہٰۤؤُلَآءِ ؕ وَنَزَّلۡنَا عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ تِبۡیَانًا لِّکُلِّ شَیۡءٍ وَّہُدًی وَّرَحۡمَۃً وَّبُشۡرٰی لِلۡمُسۡلِمِیۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में पहली आयत के मज़मून को पूर्ण किया गया है। फ़रमाता है जब सब नबी अपने अपने नमूना को पेश करेंगे उस वक़्त तू भी उन लोगों पर बतौर गवाह पेश होगा और हम तुझे दिखा कर उनसे पूछेंगे कि यह भी तो तुम में से एक था यह क्यों शिर्क इत्यादि कुप्रथाओं में नहीं फंसा और क्यों अल्लाह तआला का फ़रमांबर्दार बंदा बन कर दूसरों की हिदायत का माध्यम हुआ। क्या इसी वजह से नहीं कि उस पर ख़ुदा तआला का कलाम नाज़िल हुआ था और तुम उस से वंचित थे बल्कि इस कलाम की ज़रूरत ही महसूस नहीं करते थे।

इसके बाद इस वह्यी की बरकात की तरफ़ इशारा फ़रमाने के लिए फ़रमाता हे मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हम ने तुझ पर वह किताब उतारी है जिसमें हर रुहानी ज़रूरत की तशरीह है और इसमें रहमत और हिदायत के सामान हैं। यानी तुझ में और तेरी क़ौम के लोगों में जो अंतर है वह इसी कलाम की वजह से है। यहां کُلِّ شَیۡءٍ से दुनिया की हर चीज़ मुराद नहीं बल्कि वह चीज़ें मुराद हैं जो इसी किताब से मुनासबत रखती हैं। कोई उस्ताद अगर अपने शागिर्द को कहे कि सारी कुतुब उठा लाओ तो उसका यह मतलब नहीं होता कि वह लाइब्रेरी की सब कुतुब उठा लाए। बल्कि इसका मतलब सिर्फ़ यह होगा कि अपनी कुतुब उठा लाओ। ऐसा ही यहां पर کُلّ से मुराद वे चीज़ें हैं जो रूहानियत की तरक़्क़ी के लिए ज़रुरी हैं। अगर कोई कहे कि कुछ मसायल की तफ़सीर केवल अहादीस में मिलता है तो उस का उत्तर यह है कि उसूल सब क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन हैं। जो तफ़ासीर अहादीस में वर्णन हैं वे क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीर हैं। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम का फ़हम सबसे ज़्यादा दिया था। वह क़ुरआन-ए-करीम से जो मुतालिब अख़ज़ करते थे हम नहीं

शेष पृष्ठ 05 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अबू बकर बड़े दूर अंदेश गहरी दूरदर्शिता के मालिक और प्रत्येक कार्य के परिणाम पर निगाह रखते थे जहां सख़्ती की ज़रूरत होती सख़्ती करते, जहां क्षमा की ज़रूरत होती क्षमा से काम लेते

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के बाबरकत दौर में बाग़ी मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली मुहिम्मात का वर्णन

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर ख़िलाफ़त में बाग़ियों और मुर्तद होने वालों के ख़िलाफ़ होने वाली ग्यारवीं मुहिम का तफ़सीली वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 08 जुलाई 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना की मुहिम्मात का जो बाग़ियों के ख़िलाफ़ थीं वर्णन चल रहा है। इस सिलसिले में ग्यारवीं मुहिम के बारे में लिखा है कि यह मुहिम मुहाजिर बिन अबू उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु की यमन के मुर्तद बाग़ियों के ख़िलाफ़ थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक झंडा हज़रत मुहाजिर बिन अबू उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया था और उन्हें हुक्म दिया था कि वह उसकी फ़ौज का मुक़ाबला करें और अबना की मदद करें जिन से केस बिन मकशू और दूसरे यमन वाले शक्तिशाली थे। उस वक़्त यमन में दो अहम वर्ग थे। एक असली बाशिंदे जिनका सम्बन्ध सबा और हीमैर के ख़ानदान से था और दूसरे फ़ारसी आबा की नसल जिनको अबा की नसल जिन को अब्ना कहते थे। यह अबना उस वक़्त यमन की सबसे मुक़तदिर अक़ल्लीयत थे। एक अरसा से यमन का हाकिम किसरा की हुकूमत के अधीन था। इसलिए हुकूमत के अक्सर ओहदे अबना को प्राप्त थे। बहरहाल लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत मुहअजिर को हिदायत दी कि फ़ारिग़ हो कर कुंदा क़बीले के मुक़ाबले के लिए हज़ चले जाना।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारूक़ पृष्ठ 59 मुद्रित जावेद बट प्रैस)

हज़रा मौत यमन से पूर्व की तरफ़ एक बड़ा इलाक़ा है जिसमें बीसियों बस्तीयां हैं। हज़र मौत और सना के मध्य 216 मील की दूरी है।

(मोअज्जमुल बुल्दानभाग 2 पृष्ठ 311)

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 226 ज़व्वार एकेडेमी कराची)

किनदा यमन के एक क़बीले का नाम है।

(फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 248 ज़व्वार अकैडमी कराची)

हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के परिचय के बारे में लिखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम मुहाजिर बिन अबू उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु बिन मुग़ीरह बिन अब्दुल्लाह था। हज़रत मुहाजिर बिन अबू उमय्या उम्मुल मौमेनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के भाई थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़व-ए-बदर में मुशरेकीन की तरफ़ से शामिल हुए और इस दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हु के दो भाई हश्शाम और मसऊद क़तल हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु का असल नाम वलीद था जिसको नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तबदील कर दिया था।

(उसोदुल ग़ाबा भाग 5 पृष्ठ 265 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

(अल् असाबा फ़िल तमीज़ सहाबा भाग 6 पृष्ठ 180 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

एक रिवायत में है कि मुहाजिर ग़ज़व ए तबूक से पीछे रह गए थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस ग़ज़वा से वापस तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे नाराज़ थे। एक रोज़ हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सिर धो रही थीं तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मुझे कोई भी चीज़ किस तरह लाभ पहुंचा सकती है जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे भाई से नाराज़ हैं? जब हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में कुछ नरमी और शफ़क़त के आसार देखे तो उन्होंने अपनने ख़ादिमा को इशारा किया और वे मुहाजरी को बुला लाई। मुहाजिर मुसलसल अपना उज़्र वर्णन करते रहे यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका बहाना क़बूल फ़र्मा लिया और उनसे राज़ी हो गए और उनको कुंदा का आमिल मुक़र्रर फ़र्मा दिया परन्तु वे बीमार हो गए और वहां नहीं जा सके तो उन्होंने ज़ियाद को लिखा कि वह उनकी ख़ातिर उनका काम भी सरअंजाम दें। फिर जब उन्होंने बाद में शिफ़ा पाई तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी इमारत के तक़र्रुर को पूरा किया और उन्हें नजरान से लेकर यमन के आख़िरी हदूद तक हाकिम निर्धारित किया और क़िताल का हुक्म दिया।

(तारीख़ अल् तिब्री भाग 2 पृष्ठ 300 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

ज़हाक बिन फीरोज़ कहते हैं कि सबसे पहले यमन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में इर्तिदाद शुरू हुआ जिसका बानी ज़ुलखीमार अबहला बिन काब था जो असवद अंसी के नाम से मशहूर हुआ।

(तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 224 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

असवद अनसी यमन के क़बीला बनू अंस का सरदार था। काले रंग का होने की वजह से असवद कहलाता था।

(सीरत सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ अबू अल् नसर अनुवादक पृष्ठ 570)

एक रिवायत में इस का नाम अबहला बिन काब के बजाय अयहल बिन काब बिन औफ़ अंसी वर्णन हुआ है। असवद अनसी का लक़ब ज़ुलखिमार था क्योंकि वह हर वक़त कपड़ा लपेटे हुए रहता था।

(अल् कामिल फिल तारीख़ लेइब्ने असीर भाग 2 पृष्ठ 201 **ذکر اخبار الاسود العنسی بالیمن** दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

और कुछ के नज़दीक उसका नाम ज़ुलखिमार यानी नशे में मस्त रहने वाला भी मिलता है।

(सीरत सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ अबू नसर अनुवादक पृष्ठ : 570)

कुछ रिवायत में उस का नाम ज़ुलखिमार वर्णन किया जाता है और इस की एक वजह यह वर्णन की जाती है कि उसके पास एक सधाया हुआ गधा था। यह जब उसको कहता कि अपने मालिक को सजदा करो तो वह सजदा करता। बैठने को कहता तो बैठ जाता। खड़े होने को कहता तो खड़ा हो जाता।

(अल् अन्साब सुहारी भाग 1 पृष्ठ 387 मुद्रित 2006 ई.)

कुछ के नज़दीक उसको ज़ुलखिमार इसलिए कहा जाता था कि वह कहता था कि जो शख़्स मुझ पर ज़ाहिर होता है वह गधे पर सवार होता है।

शेष पृष्ठ 8 पर

... अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया है। अगर हम अच्छे काम करेंगे तो जन्नत का वादा है और अगर बुरे काम करेंगे तो जहन्नुम में जाना पड़ेगा। इसमें अल्लाह तआला का क्या लाभ है?

... अल्लाह तआला ने अपनी मुक़द्दस किताबों में complicated बातें क्यों वर्णन की हैं और सब कुछ आसान और वाज़िह अंदाज़ में क्यों नहीं बता दिया। हालाँकि वह जानता था कि बाद में मतभेद होने हैं?

... छोटे बच्चों वाली माओं को नमाज़ के वक़्त बच्चे को साथ लेकर या गोद में उठा कर नमाज़ पढ़नी पड़ती है। उस वक़्त फ़िलतन नमाज़ से ज़्यादा बच्ची की तरफ़ तवज्जा रहती है। इससे हम नमाज़ की फ़ज़ीलत से महरूम तो नहीं हो रही होतीं?

... कई दफ़ा शादी के बाद लड़कियां अपना नाम बदल कर पति के नाम के साथ मिला कर रख लेती हैं। इस्लामी नज़रिया के मुताबिक़ ऐसा करना जायज़ है?

... pandemic हालात में हम पहले की तरह तब्लीग़ नहीं कर पा रही हैं। अब इन हालात में हम किस तरह अपने काम को जारी रख सकती हैं?

... शादी के मामले में दीन को तर्जीह देने की बात की गई है। परन्तु आजकल लोग ख़ूबसूरती और दूसरी विशेषताओं को ज़्यादा प्राथमिकता देते हैं जिस वजह से जमाअत की काफ़ी नेक और दीनी लड़कियों की शादी नहीं हो रही, इस बारे में हुज़ूर से राहनुमाई की दरख़ास्त है?

... अल्लाह तआला के नज़दीक कौन सी बात सबसे पसंदीदा और कौन सी बात सबसे न पसंदीदा है?

... हुज़ूर बंगलादेश की लजना और नास्रात के लिए कोई पैग़ाम इरशाद फ़र्मा दें।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(क़िस्त19)

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि अल्लाह तआला ने हमें पैदा किया है। अगर हम अच्छे काम करेंगे तो जन्नत का वादा है और अगर बुरे काम करेंगे तो जहन्नुम में जाना पड़ेगा। इस में अल्लाह तआला का क्या लाभ है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 4 फ़रवरी 2020 में इस सवाल का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

उत्तर : बुनियादी तौर पर यह सवाल ही दरुस्त नहीं है। क्योंकि इस्लाम की कदापि यह तालीम नहीं कि इन्सान जन्नत की लालच से नेकियां बजा लाए या जहन्नुम के ख़ौफ़ से बुराईओं से बच्चे। ऐसा ईमान जो किसी लालच या किसी ख़ौफ़ से हो वह कमज़ोर ईमान होता है। मख़लूक़ का अपने स्रष्टा से ऐसा मज़बूत ताल्लुक़ होना चाहिए जो बहिश्त की लालच या दोज़ख़ के ख़ौफ़ से पाक हो। बल्कि अगर फ़र्ज़ कर लिया जाए कि न बहिश्त है और न दोज़ख़ है तब भी इन्सान अपने रब की इबादत में, उसकी मुहब्बत और इताअत में ज़र्रा भर भी अंतर न आने दे। इसीलिए क़ुरआन और हदीस में स्रष्टा और मख़लूक़ के सम्बन्ध को इस तरह वर्णन किया गया है कि इन्सान अल्लाह तआला की सिफ़ात को इख़्तेयार करके उसका हक़ीक़ी अबद बने और उसके हर क़ौल और फ़ेअल में अल्लाह तआला की रज़ा का हुसूल पेश-ए-नज़र हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस मज़मून को कई जगहों पर वर्णन फ़रमाया है। एक जगह आप फ़रमाते हैं : "हमारा बहिश्त हमारा ख़ुदा है हमारी आला लज़्ज़ात हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हमने उसको देखा और हर एक ख़ूबसूरती उस में पाई। यह दौलत लेने के लायक़ है अगरचे जान देने से मिले और यह लाल ख़रीदने के लायक़ है अगरचे समस्त वजूद खोने से हासिल हो।"

(कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 21)

अतः अल्लाह और बंदे का ताल्लुक़, आशिक़ और माशूक़ वाला ताल्लुक़ है। कोई आशिक़ अपने माशूक़ से यह नहीं कहता कि मैं तुझ पर इसलिए आशिक़ हूँ कि तू मुझे इतना रुपया या अमुक अमुक वस्तु देदे। कदापि नहीं। इस का इशक़ तो हर किस्म के लालच से पाक होता है।

जहां तक इस बात का ताल्लुक़ है कि इन बातों से अल्लाह तआला को क्या लाभ पहुंचता है? तो इस का जवाब यह है कि उनमें अल्लाह तआला का कोई लाभ नहीं क्योंकि वह हर किस्म के लाभ या नुक़्सान से पाक ज़ात है। उसने इन्सान को यह तालीम इन्सान ही के लाभ के लिए दी है। इसी लिए वह फ़रमाता है कि "जो शख़्स शुक्र करता है उस के शुक्र का लाभ उसी की जान को पहुंचता है और जो नाशुक्री करता है तो निसंदेह अल्लाह बेनयाज़ है (और) बहुत तारीफ़ वाला है।"

(सूरः लुक़्मान : 13)

यह सवाल ऐसा ही है, जैसे कोई कहे कि एक माँ के अपने बच्चे को दूध पिलाने और बच्चा के बीमार होने पर उसे कड़वी दवाई पिलाने में यस माँ का क्या लाभ है? या एक उस्ताद के पढ़ाई करने वाले शागिर्द को पास करने और पढ़ाई न करने वाले शागिर्द को फ़ेल करने में इस उस्ताद का क्या लाभ है?

अतः जिस तरह उन उमूर में माँ और उस्ताद का कोई लाभ या नुक़्सान नहीं बल्कि इस बच्चा और शागिर्द का लाभ और नुक़्सान है उसी तरह अल्लाह और बंदे के विषय में भी अल्लाह तआला का कोई लाभ या नुक़्सान नहीं बल्कि इलाही अहकामात की बजा आवरी में इन्सान का लाभ और उन अहकामात को न मानने में इन्सान ही का नुक़्सान है।

प्रश्न : एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि अल्लाह तआला ने अपनी मुक़द्दस किताबों में complicated बातें क्यों वर्णन की हैं और सब कुछ आसान और वाज़ेह अंदाज़ में क्यों नहीं बता दिया। हालाँकि वह जानता था कि बाद में मतभेद होने हैं? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 4 फ़रवरी 2020 में इस सवाल का

निमंलिखित शब्दों में जवाब अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : असल में आला दर्जे के ईमान के लिए आज़माईश शर्त होती है। इसी लिए सूरत अल्-बक़रः की इबतिदाई आयात में हिदायत पाने वाले और कामयाबी हासिल करने वाले मुत्तक़ियों की एक निशानी यह वर्णन फ़रमाई कि वे ग़ैब पर ईमान लाते हैं। अतः ईमान हमेशा इसी सूरत में मुफ़ीद होता है जब इस में कोई छुपा हुआ का पहलू हो। ताकि मोमिन और ग़ैर मोमिन का अंतर वाज़िह हो सके।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस इख़फ़ा की हिक्मत वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "पेशगोई में किसी क़दर इख़्फ़ा और मुतशाबेहात का होना भी ज़रूरी है और यही हमेशा से सुन्नत-ए-इलाही है .... अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणी तौरात और इंजील में हैं वह निहायत स्पष्ट शब्दों में होतीं ... तो फिर यहूदियों को आपके मानने से कोई इंकार नहीं हो सकता था। लेकिन ख़ुदा तआला अपने बंदों को आज़माता है कि उनमें मुत्तक़ी कौन है जो सदाक़त को उसके निशानात से देखकर पहचानता है और उस पर ईमान लाता है।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 283 ऐडीशन 1984 ई.)

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ नैशनल आमला लजना इमाइल्लाह बंगलादेश की virtual मुलाक़ात तिथि 14 नवंबर 2020 ई. में एक लजना मैंबर ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि छोटे बच्चों वाली माओं को नमाज़ के वक़्त बच्चे को साथ लेकर या गोद में उठा कर नमाज़ पढ़नी पड़ती है। उस वक़्त फ़िल्तन नमाज़ से ज़्यादा बच्ची की तरफ़ तवज्जा रहती है। इस से हम नमाज़ की फ़ज़ीलत से महरूम तो नहीं हो रही होतीं? हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : नहीं महरूम नहीं हो रही होतीं। लेकिन आप यह किया करें कि जब बच्चा रोता है तो उसको गोद में उठा लिया और नमाज़ पढ़ ली और फिर जब सजदा में गए तो बचा को एक साईड पर बिठा दिया फिर नमाज़ पढ़ ली। यह तो इज़्तेरारी हालत है अल्लाह तआला दिलों का हाल जानता है। क्योंकि आप नेक नीयती से नमाज़ पढ़ रही हैं तो अल्लाह तआला उस का सवाब देता है। लेकिन नमाज़ का वक़्त आपके पास काफ़ी होता है। फ़ज्र के वक़्त तो बच्चे उमूमन सोए हुए होते हैं। या फीडर या दूध दे के, या फीड दे के उसको सुला के आप आराम से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ सकती हैं। आम तौर पर कोशिश यह करें कि बच्चा को सुलाने के बाद या बच्चा को फीड दे दी है तो फिर उसके बाद उस को लिटा के अगर वक़्फ़ा है तो फिर आराम से नमाज़ पढ़ें। और अगर वक़्फ़ा थोड़ा है उदाहरणतः सूरज डूब रहा है या फ़ज्र की नमाज़ पर सूरज निकल रहा है तो फिर मजबूरी है कि जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ लेनी है। या आप की अस्र की नमाज़ सूरज डूबने की वजह से ज़ाए हो रही है तो जल्दी से पढ़ लें। लेकिन उमूमन कोशिश यह करें कि बच्चा से फ़ारिग़ होने के बाद इस को सुला के, लिटा के आप अपनी नमाज़ पढ़ लें। लेकिन अगर मजबूरी में आपको बच्चा को गोद में ले के पढ़नी भी पढ़ती है तो इस में कोई हर्ज नहीं है। लेकिन इस में कोशिश करें कि जितनी ज़्यादा तवज्जा आप नमाज़ की तरफ़ क़ायम कर सकती हैं क़ायम रखें, नमाज़ के जो शब्द हैं इन पर ग़ौर करती रहें। अल्लाह तआला तो सवाब देने वाला है, अल्लाह तआला रहमान, रहीम है और बख़शिश करने वाला भी है। तो अल्लाह तआला यह ज़ुलम नहीं करता। अल्लाह तआला को सारी सूरत-ए-हाल पता है। लेकिन अगर सारी कोशिशों के बावजूद किसी औरत के पास वक़्त नहीं रहता और उस को बचा को गोद में ले के नमाज़ पढ़ना मजबूरी है तो अल्लाह तआला उसका सवाब देने वाला है, देता है।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक लजना मैंबर ने दरयाफ़त किया कि कई दफ़ा शादी के बाद लड़कियां अपना नाम बदल कर पति के नाम के साथ मिला कर रख लेती हैं। इस्लामी नज़रिया के मुताबिक़ ऐसा करना जायज़ है? हुज़ूर अनवर ने इस सवाल के जवाब में फ़रमाया

जवाब कोई हर्ज नहीं है। रख लेती हैं तो क्या हो गया? अब उनकी जो पहचान है सरकारी काग़ज़ों में, तो मजबूरी है। कई दफ़ा सरकारी काग़ज़ों में एक नाम मसलन अतीया बाबर किसी ने अपने बाप के नाम से नाम रखा हुआ है। तो जब उस की शादी हो जाएगी, उस की रजिस्ट्रेशन हो जाएगी तो रजिस्ट्रेशन में, उसके निकाह फ़ार्म या सरकारी काग़ज़ों में उसका नाम अतीया मुबश्शिर के नाम से अगर आ जाएगा, बाबर की जगह मुबश्शिर आ जाएगा तो इस में क्या हर्ज है? कोई हर्ज नहीं इस में। इस्लाम में इस की बिल्कुल इजाज़त है कि पति के नाम से नाम रख लिया जाए। असल नाम उसका अतिया है। दूसरा नाम तो पहचान के लिए रखा हुआ है, पहले बाप उसकी पहचान था अब शादी के बाद ख़ावंद उसकी पहचान हो गया। बल्कि अच्छी बात है जो ख़ावंद की पहचान के साथ नाम रखेंगे तो ख़ावंद को अपनी बीवी की इज़्ज़त का ख़्याल रहेगा और बीवी को अपने ख़ावंद की इज़्ज़त का ख़्याल रहेगा। और दोनों में इससे प्यार और ताल्लुक़ ज़्यादा क़ायम होगा। इसलिए ख़ावंद के नाम से नाम रखने में कोई हर्ज नहीं।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक लजना मैंबर का सवाल पेश हुआ कि इन pandemic हालात में हम पहले की तरह तब्लीग़ नहीं कर पा रही हैं। अब इन हालात में हम किस तरह अपने काम को जारी रख सकती हैं। हुज़ूर इस मुआमला में हमारी राहनुमाई फ़र्मा दें? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस के जवाब में फ़रमाया :

उत्तर : अब मजबूरी है बाहर तो निकल नहीं सकते। कुछ मुल्कों में हुकूमत की तरफ़ से कोविड की वजह से social distancing और कुछ दूसरी चीज़ों की कुछ पाबंदियां हैं। लेकिन इस में ऑनलाइन अपने ज़ाती राबते किए जा सकते हैं। जिन्हों ने काम करना होता है उन्होंने सोशल मीडीया पर ऑनलाइन तब्लीग़ के लिए प्रोग्राम बना लिए हैं। अगर आपका तब्लीग़ डिपार्टमैंट सोशल मीडीया पर कोई वेबसाइट बना लेता है तो उस पर लजना तब्लीग़ कर सकती हैं, सारी लजना शामिल हो सकती हैं। अपने contacts को फ़ोन कर के या सोशल मीडीया के ज़रीया से message भेज के तब्लीग़ कर सकती हैं। इस्लाम की तालीम के बारे में कोई अच्छा message कोई अच्छा quote भेज दिया। इस से फिर आहिस्ता-आहिस्ता रस्ते खुलते हैं। तो इन हालात में भी तब्लीग़ करने के नए रस्ते explore हो सकते हैं, वे तो ख़ुद कोशिश कर के explore करने चाहिऐं। ठीक है?

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक लजना मैंबर ने हुज़ूर से दरयाफ़त किया कि शादी के मामले में दीन को तर्जीह देने की बात की गई है। लेकिन आजकल लोग ख़ूबसूरती और दूसरी ख़सुसीआत को ज़्यादा तर्जीह देते हैं जिस वजह से जमाअत की काफ़ी नेक और दीनी लड़कियों की शादी नहीं हो रही, इस बारे में हुज़ूर से राहनुमाई की दरख़ास्त है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस सवाल का जवाब देते हुए फ़रमाया :

उत्तर : देखें हमने तो कोशिश करनी है और मैं तो कोशिश करता रहता हूँ। लड़कों को भी समझाता रहता हूँ। यह बिल्कुल सही बात कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यही फ़रमाया है कि तुम लोग जो किसी से शादी करते हो तो इस की विशेषताओ के आधार पर करते हो या उस का ख़ानदान देखते हो या उस की शक्ल देखते होया उस की दौलत देखते हो। लेकिन एक मोमिन जो है इस को हमेशा औरत का दीन देखना चाहिए। अब मसला यह है कि अगर लड़कों में दीन नहीं होगा तो वे लड़कियों का दीन किस तरह देखेंगे? तो जो जमाअती निज़ाम है और ख़ुद्दामुल अहमदिया है, मैं उनको भी कहता हूँ कि लड़कों में दीनदारी पैदा करो। जब लड़कों में दीनदारी पैदा होगी तो फिर वे निसंदेह ऐसी लड़कियों से शादी करने की कोशिश करेंगे जो दीनदार हों। तो यह तर्बीयत का ममला है और इस तरफ़ मैं जमाअत को भी तवज्जा दिलाता रहता हूँ और ख़ुद्दामुल अहमदिया को भी तवज्जा दिलाता रहता हूँ और अंसारुल्लाह को भी तवज्जा दिलाता रहता हूँ। लेकिन लजना का काम यही है कि वह ख़ुद भी कोशिश करें, जो बड़ी उम्र की लजना मेम्बरात हैं, माएं हैं वे भी अपने बच्चों और लड़कों की तर्बीयत करें, उनको तवज्जा दिलाएँ कि तुमने नेक और दीनदार लड़की से शादी करनी है। अगर माएं अपना किरदार अदा करेंगी तो निसंदेह उनके लड़के भी दीनदार लड़कियों से शादी करेंगे। मसला यह है कि जब लड़के की शादी का मामला आता है तो माएं कहती हैं कि हमारा बच्चा जो है हम उस की शादी अपनी मर्ज़ी से करेंगे। और जब लड़कियों की उम्र गुज़र रही होती है और लड़कियों के रिश्ते नहीं मिलते, जब वे बड़ी हो जाती हैं, तो फिर माएं और बाप कहते हैं कि जमाअत उनकी शादी करवा दे। हालाँकि दोनों को जमाअत के सपुर्द करना चाहिए और कहना चाहिए कि दीनदार लड़के और दीनदार लड़कियां आपस में मिल कर शादियां करें ताकि जमाअत के अंदर ही लड़के और लड़कियां रहें और आइन्दा भी नेक और दीनदार नसल पैदा होती रहे। तो यह तो कोशिश है, मर्दों की भी और औरतों की भी मुशतर्का कोशिश है, जो मिल के करनी चाहिए। इस में माओं को भी अपना किरदार अदा करना चाहिए और बापों को भी अपना किरदार अदा करना चाहिए। इसके लिए मैं कोशिश भी करता हूँ, मैं तवज्जा भी दिलाता हूँ, दुआ भी करता हूँ। अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक़ दे।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक सवाल हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में यह पेश हुआ कि अल्लाह तआला के नज़दीक कौन सा कार्य सबसे पसंदीदा और कौन सा कार्य सबसे न पसंदीदा है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस बारे में फ़रमाया :

उत्तर : बात यह है कि हर एक के हालात के मुताबिक़ अमल है। आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास एक शख़्स आया उसने कहा कि कौन सी नेकी है जो मैं इख़तियार करूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम अपने माँ बाप की ख़िदमत करो जो अल्लाह तआला को पसंद है। एक दूसरा शख़्स आया उसने कहा कौन सी नेकी है जो मैं करूँ जो अल्लाह तआला को पसंद है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम माली क़ुर्बानी करो, यह अल्लाह तआला को पसंद है। तीसरा शख़्स आया उसने कहा बताएं कौन सा अमल है जो अल्लाह तआला को पसंद है जो मैं करूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा अल्लाह की राह में जिहाद करो। इसी तरह चौथा शख़्स आया उसको एक और बात बताई। तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनके हालात जानते थे और पता था कि किस-किस में कौन कौन सी कमज़ोरियाँ हैं। कुछ उनके हालात जानने की वजह से पता होंगी, कुछ अल्लाह तआला भी राहनुमाई करता होगा। तो हर एक के हालात के मुताबिक़ अमल होता है। यह इन्सान को ख़ुद जायज़ा लेना चाहिए कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में सात सौ अहकाम दिए हैं। नेकियां भी बताई हैं, नवाही भी बताए हैं। यह भी बताया है कि क्या काम करने हैं और क्या मना हैं। अमल करने वाले कार्य क्या हैं और नहीं करने वाले कार्य क्या हैं। करने वाले काम क्या हैं और न करने वाले काम किया हैं। अल्लाह तआला ने बड़ी लिस्ट बता दी। अब ख़ुद इन्सान को यह देखना चाहिए कि मेरे मैं कौन सी कमज़ोरी है जिसको मैं दूर करूँ और कौन सी नेकी है जो मैं नहीं करता उसको मैं करूँ। तो अगर हर एक अपना जायज़ा लेकर ख़ुद यह करे तो इस्लाह पैदा हो जाती है। इसलिए अपने नफ़्स से फ़तवा लेना चाहिए। हर एक फ़तवा black and white में ज़ाहिर नहीं हो जाता। उसूली तौर पर यही हुक्म है कि अपनी कमज़ोरियों को तलाश करो और उनको दूर करने की कोशिश करो। और न केवल कमज़ोरियाँ दूर करो बल्कि नेकी भी करो। इसलिए अल्लाह तआला ने जो बुनियादी उसूल बता दिया वह यह बता दिया कि तुम्हारे दो काम हैं। एक यह कि अल्लाह तआला का हक़ अदा करो, उसकी इबादत का हक़ अदा करो। अगर अल्लाह तआला की इबादत का हक़ सही तरह अदा किया जाए तो अल्लाह तआला फिर इन्सान को तौफ़ीक़ देता है कि वह नेकियां ही करता रहे। क्योंकि उस की इबादत का हक़ अदा हो रहा होता है। दूसरे अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि इसके बंदों का हक़ अदा करो। जब इन्सान उसके बंदों का हक़ अदा करने की कोशिश करता है तो फिर किसी से बुराई नहीं करता और फिर मज़ीद नेकियों की भी तौफ़ीक़ मिलती चली जाती है। यह दोनों चीज़ें आपस में मिली हुई हैं। तो बुनियादी चीज़ यही है कि अल्लाह का हक़ अदा करो और बंदों का हक़ अदा करो। बाक़ी इन्सान तफ़सीलात में जाए तो अपना ख़ुद जायज़ा ले, अपने ज़मीर से देखे, पूछे कि क्या बुराईयां हैं जो मैंने छोड़नी हैं और क्या नेकियां हैं जो मैंने करनी हैं। बाक़ी यह भी है कि एक शख़्स आया उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा कि मैं इतना नेक नहीं हूँ, मेरे में बहुत सारी बुराईयां हैं। आप मुझे एक बुराई बता दें जो मैं छोड़ दूं, बाक़ी में अभी नहीं छोड़ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अच्छा तुम यह अह्द कर लो कि तुमने झूठ नहीं बोलना, हमेशा सच्च बोलना है। जब उसने हमेशा सच्च बोलने का इरादा किया तो हर दफ़ा जब कोई बुराई करने लगता था तो उसे ख़्याल आता था अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा कि तुमने यह बुराई की है तो अगर मैं सच्च बोलूँगा तो शर्मिंदगी होगी, झूठ बोलूँगा तो मैंने वादा किया है कि मैं झूठ नहीं बोलूँगा। इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता उस की सारी बुराईयां ख़त्म हो गईं। तो इन्सान को ख़ुद देखना चाहिए। इसी लिए अल्लाह तआला ने झूठ को शिर्क के बराबर क़रार दिया है। इसलिए इन्सान को जायज़ा लेना चाहिए कि मैंने छोटी से छोटी बात पर भी झूठ नहीं बोलना क्योंकि यह शिर्क है और अल्लाह तआला को शिर्क न पसंद है। तो यह बहुत सारी बातें हैं जो हर एक के हालात के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ होती हैं। इसलिए ख़ुद जायज़ा ले लें कि क्या कमी है। लेकिन बुनियादी उसूल यही है कि अल्लाह का हक़ अदा करो और बंदों का हक़ अदा करो और जब कोई काम करने लगो तो यह देख लू कि अल्लाह तआला मुझे देख रहा है। जब यह यक़ीन हो कि अल्लाह तआला मुझे, मेरे हर काम को देख रहा है तो फिर इन्सान बुराई से रुकेगा और नेकियां करेगा।

प्रश्न : इसी virtual मुलाक़ात तिथि 14 नवंबर 2020 ई. में सदर साहिबा लजना इमाइल्लाह बंगलादेश ने हुज़ूर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि हुज़ूर बंगलादेश की लजना और नास्रात के लिए कोई पैग़ाम इरशाद फ़र्मा दें जो इस मीटिंग के बाद वे सबको पहुंचा दें। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर: सबको मेरा अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू पहुंचा दें और साथ यह भी कह दें कि अपने ईमान पर क़ायम रहना। मुश्किल हालात आते हैं, परेशानियाँ आती हैं, तकलीफ़ें आती हैं, इस को कभी अपने दीन पर हावी न होने देना। और हमेशा हर मुश्किल और हर तकलीफ़ के वक़्त अल्लाह तआला के आगे झुकना। और किसी इन्सान से किसी किस्म की उम्मीद नहीं रखनी। और अपनी और अपने बच्चों की और अपनी नसल की तर्बीयत के लिए अह्द करो कि हमने उन्हें नेक और सालिह बनाना है और सही मोमिन बनाना है। और अगर यह दुआ करेंगी और अपने बच्चों के लिए कोशिश करेंगी तो ज़ाहिर है कि ख़ुद भी इसके लिए कोशिश करनी पड़ेगी। इसलिए अपनी इस्लाह की तरफ़ भी बहुत ज़्यादा तवज्जा दें ताकि आइन्दा नेक नसलें पैदा होती रहीं। और हमेशा याद रखें कि अगर हमारी औरतों की इस्लाह हो जाए और हमारी औरतें नेक हो जाएं, हमारी औरतें तक़्वा के मयारों को हासिल करने लगें तो हमारी नसलें इंशा अल्लाह तआला महफ़ूज़ हो जाएँगी, फिर हमें कोई फ़िक्र नहीं होगी। यही लजना इमाइल्लाह का काम हैऔर यही मेरा पैग़ाम सब लजना इमाइल्लाह को और सब नास्रात को है जिन्हों ने आइन्दा भी इंशाअल्लाह तआला माएं बनना है।

पृष्ठ 01 का शेष

कर सकते। अतः अगर आपने क़ुरआन के अर्थों की कुछ तफ़ासील वर्णन की हैं तो उसके ये मअनी नहीं कि क़ुरआन-ए-करीम ना-मुकम्मल है बल्कि उसके ये अर्थ हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने कामिल फ़हम से उन मसायल का क़ुरआन से इस्तिंबात किया, जबकि हमारा ज़हन उस बारीकी को नहीं पहचान सका।

क़ुरआन वाले कहलाने वालों को इस मसला में सख़्त ग़लती लगी है। वे कहते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमारी तरह के आदमी थे उनकी बात क्यों मानें जो क़ुरआन-ए-करीम में है वे मानेंगे। हालाँकि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात के मानने का सवाल ही नहीं बल्कि सवाल यह है कि आप हम से क़ुरआन-ए-करीम को ज़्यादा समझते थे।

अल्लाह तआला फ़रमाता है وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरआन-ए-करीम के सम्बन्ध में जो कुछ फ़रमाते थे वह्यी इलाही के मुताबिक़ फ़रमाते थे ग़लती नहीं करते थे। अतः जिसको अल्लाह तआला ने महफ़ूज़ रखा उसके फ़हम क़ुरआन को दूसरों के फ़हम पर मुक़द्दम किया जाएगा। हमारा यह हक़ है कि यह बेहस करें कि यह हदीस सही नहीं परन्तु यह नहीं कह सकते कि हदीस तो सही है परन्तु रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़लती की। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) क़ुरआन-ए-करीम की तालीम के बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तफ़सीर अगर हमारी समझ में नहीं आती तो भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की तफ़सीर को हमें सही मानना पड़े जबकि इस शर्त पर कि जिस हदीस में वे वर्णित है वह सेहत अहादीस के उसूल पर पूरी उतरती हो।

उस जगह क़ुरआन-ए-करीम के चार काम हैं। (1) تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ है अर्थात सब ज़रूरी उमूर रूहानियत की तशरीह इस में मौजूद है। (2) हिदायत है। (3) रहमत है। (4) मोमिनों के लिए बशारत है।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 4 पृष्ठ 218 मुद्रित क़ादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।" (ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की जर्मन यात्रा जून 2014 ई. (भाग-3)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर साहब, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

इस्लामी शिक्षा की रोशनी में ही जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने हमें फ़रमाया तुम दूसरों के दर्द को अपना दर्द समझो, तभी तुम हक़ीक़ी रंग में प्यार और मुहब्बत का प्रकटन कर सकोगे। केवल तुम्हारा दावा नहीं होगा। केवल तुम्हारे मुँह की बातें नहीं होंगी बल्कि जब तुम दर्द समझोगे और दर्द को दूर करने का प्रयास करोगे तो वही चीज़ है जो तुम्हें इस काबिल बनाएगी कि तुम हक़ीक़ी रंग में प्यार और मुहब्बत कर सको और इसी से फिर संसार में अमन भी क़ायम होगा।

क़ुरआन शरीफ़ ने तो हमें यह शिक्षा भी दी है कि दूसरों के बुतों को भी बुरा न कहो। वे उत्तर में तुम्हारे ख़ुदा को बुरा कहेंगे और फिर जब ख़ुदा को बुरा कहेंगे तो फिर एक तो तुम इस ख़ुदा को बुरा कहलवाने का कारण बन रहे होगे क्योंकि किसी के बुत को बुरा कह कर पहल तुमने की है और इसके उत्तर में वह ख़ुदा को बुरा कह रहे हैं। इस गुनाह में तुम भी शामिल हो। दूसरा जब तुम बुरा कहोगे और उत्तर में वह भी बुरा कहेंगे तो फिर फ़साद और झगड़े बढ़ते चले जाऐंगे। बजाय अमन क़ायम होने के इस जगह पर फ़साद क़ायम हो जाएगा।

अतः यह वह शिक्षा है जिसकी दृष्टी से हम प्यार और अमन और मुहब्बत का संदेश दुनिया में पहुंचाते हैं। अब यह मस्जिद जब बन गई है, पहले भी आप लोगों को यहां अनुवभ है और वही अनुवभ जो आप लोगों का है उसका इज़हार आज यहां हो रहा है, कि आप लोग जो इस संख्या में यहां बैठे हुए हैं कि अहमदी प्यार और मुहब्बत करने वाले हैं और आप लोगों से सम्बन्ध रखने वाले हैं, जिसका मुक़र्ररीन ने वर्णन भी किया है। अतः यह प्रकटन तो अहमदी पहले ही कर रहे हैं और जैसा कि मैंने कहा इस का सबूत यहां आपकी मौजूदगी है। अब मस्जिद बनने के बाद इन शा अल्लाह तआला यह प्रकटन पहले से बढ़कर होगा। क्योंकि मस्जिद अमन का एक निशान है, प्यार का एक निशान है, मुहब्बत का एक निशान है। दूसरे की भावनाओं की क़दर करने का एक निशान है, इबादत की जगह है ताकि इस ख़ुदा के आगे झुकें जिसने हमें पैदा किया है, जो अपनी मख़लूक़ से प्यार करता है। ख़ुदा तआला अपनी मख़लूक़ से बहुत प्यार करता है, जो उसने पैदा की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

अतः हमारा कर्तव्य है कि जब हम अल्लाह तआला की ख़ातिर एक मस्जिद बनाते हैं, यहां जमा होते हैं और उस ख़ुदा की इबादत करने वाले हैं, तो इसकी मख़लूक़ से भी हम प्यार करें। क़त-ए-नज़र इसके कि वह किस धर्म से सम्बन्ध रखता है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में हमें पहला सबक़ ही यह दिया है कि तुम उस ख़ुदा की इबादत करो जो ربّ العالمین (समस्त संसार का रब) है, जो समस्त जहानों का रब है। जो कुल कायनात का रब है, जो ज़मीन में रहने वाली प्रत्येक मख़लूक़ का रब है और इन्सान जो सबसे बढ़कर उसकी मख़लूक़ है, अशरफ़ुल मख़लूक़ात है, इस का तो सबसे बढ़कर अल्लाह तआला ख्याल रखता है। अतः जब हम इस ख़ुदा की इबादत करने वाले हैं जो समस्त मख़लूक़ का रब है तो यह किस तरह हो सकता है कि हम अल्लाह तआला की मख़लूक़ से किसी भी रंग में नफ़रत करने वाले हों या उसके अमन को बर्बाद करने वाले हों। अतः प्रत्येक धर्म के मानने वाले को ख़ुदा तआला पालता है, उनका रब है, उन के लिए सहूलियात प्रदान करता है और जो इस को नहीं भी मानते, उस की रहमानियत उन के लिए भी काम कर रही है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मैं रहमान हूँ, जो मेरी इबादत नहीं भी करने वाले उनकी ज़रूरीयात को मैं इसलिए पूरा करता हूँ कि मैंने उनको पैदा किया है और इस संसार में जहां तक उनकी ज़रूरीयात का प्रश्न है मैं उन को पूरा करता रहूँगा। अतः रहमान ख़ुदा और इस पालने वाले ख़ुदा की हम इबादत करने वाले हैं और हमारे लिए यह ज़रूरी है कि हम फिर अल्लाह तआला की मख़लूक़ की क़दर करें और रहम के जज़बे के साथ उनसे सम्बन्ध क़ायम करें। जो हमारा विरोध करने वाले हैं इन से भी नरमी का व्यवहार करें और कभी फ़साद पैदा न होने दें।

अतः इबादत के साथ-साथ अमन और सलामती का यह संदेश है जो हमने फैलाना है और फैलाते हैं और इन्सानियत की सेवा के काम भी हम संसार में कर रहे हैं। इसके मंसूबे भी हमारे हैं क्योंकि हक़ीक़ी इबादत करने वाले का यह काम है कि वह इन्सानियत की सेवा भी करे, ग़रीब की सेवा करे। ग़रीब देशों में हमारे बहुत सारे ख़िदमत-ए-ख़लक़ के काम चल रहे हैं, Project चल रहे हैं। जमाअत ग़रीबों की सेवा करती है। बहुत से मंसूबे ऐसे हैं, हमारा एक ज़ेली इदारा ह्यूमैनिटी फर्स्ट का है जिसको अफ़्रीक़ा में कुछ ग़रीब देशों दिए गए हैं जहां वह अपना काम कर रहे हैं। Projects के अतिरिक्त जो जमाअत का केंद्री निज़ाम चला रहा है, बहुत सारे ऐसे Projects हैं जो जमाअत अहमदिया ग़रीब देशों में चला रही है उदाहरण के लिए बनियन में एक Orphanage है, यतीमख़ाना है। जमाअत जर्मनी के अधीन यह Project चल रहा है और बिना भेदभाव जाति धर्म लोगों की सेवा हो रही है बल्कि इस यतीमख़ाना में आने वाले लगभग समस्त के समस्त बच्चे ही उन लोगों में से हैं जो अहमदी नहीं। हम तो उनकी सेवा कर रहे हैं और जहां भी हमारे आदमी सेवा करने जाते हैं वहां हमारे सामने अल्लाह तआला का यह आदेश होता है कि अपने भाई की सेवा करो, विकलांगों की सेवा करो, मजबूरों की सेवा करो। और वहा Projects जो जर्मनी की जमाअत को दिए गए हैं उन पर जब इन देशों में अनुकरण दरआमद होता है तो न केवल यह कि हम सेवा कर रहे होते हैं बल्कि उन मुल्कों में जर्मनी की भी पहचान होती है। मानो कि हम ख़िदमत-ए-इन्सानियत के साथ इन मुल्कों में जर्मनी के सफ़ीर भी हैं। यही नहीं कि यहां इस मुल्क में हम सेवा कर रहे हैं बल्कि हमारी ख़िदमात संसार में विभिन्न जगहों पर हैं। जैसा कि मैं ने कहा विभिन्न देशों विभिन्न मुल्कों के सपुर्द किए गए हैं। जर्मनी की जमाअत के सपुर्द भी कुछ ग़रीब देशों हैं। जब ये वहां सेवा करने जाते हैं तो यह पता लगता है कि ये लोग जर्मनी से आए हैं, ये ख़िदमत-ए-इन्सानियत करने के लिए आए हैं, तो इस तरह जर्मनी के सफ़ीर बन कर वहां जर्मनी के नाम को भी रोशन करने वाले हैं। ये काम हैं जो जमाअत संसार में करती है और यही हमारा उद्देश्य है जो बजा लाने के लिए हम प्रयास करते हैं कि इबादतों के साथ-साथ इन्सानियत की सेवा भी की जाए। यही यहां के रहने वाले अहमदियों को मैं पुनः इस बात की याद-दहानी करवाना चाहता हूँ कि इस मस्जिद के बनने के बाद आपकी इबादतों के मयार भी पहले से ज़्यादा बुलंद हों और इन्सानियत की सेवा के मयार भी पहले से ज़्यादा बुलंद हों। और इलाक़े में, इस शहर में जहां आप रहते हैं अमन क़ायम करने और सेवा करने के मयार भी पहले से बुलंद हों और मेहमानों को भी मैं पुनः यह अर्ज़ करूँगा कि आप तो यहां आए, निश्चित तौर पर आपके दिल में जमाअत के लिए बेहतर भावनाओं और विचार थे तभी आप यहां पधारे और कुछ ऐसे लोग हैं और होते हैं प्रत्येक मुल्क में और शहर में जिनके कुछ आरक्षण होते हैं, तो आप लोग अपने अपने हलक़ा में उनके आरक्षण को भी दूर करने का प्रयास करें कि जमाअत अहमदिया प्यार और मुहब्बत फैलाने वाली जमाअत है और जब ये मस्जिदें बनाई जाती है तो मस्जिद इस प्यार और मुहब्बत को फैलाने का एक और माध्यम बनती है और बहुत बड़ा माध्यम बनती है और मस्जिद से किसी किस्म का भय और ख़तरा नहीं है बल्कि यह खुली है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुली है और जब भी और जिस समय भी आप चाहें यहां आएं और इन शा अल्लाह तआला आप हम से प्यार और मुहब्बत के भावनाएं ही देखेंगे। इन कुछ शब्दों के बाद में अपनी बात ख़त्म करता हूँ। शुक्रिया। जज़ाकल्लाह।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण छः बजकर 37 मिनट तक जारी रहा। अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

इसके बाद मारकी में ही रिफ्रेशमेंट का प्रबन्ध किया गया था। इसके बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अज़ राहे शफ़क़त मेहमानों से बातचीत फ़रमाते और कुछ मेहमानों को उपहार भी प्रदान फ़रमाए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजना की मारकी में तशरीफ़ ले गए जहां महिलाओं को दर्शन का सौभाग्य नसीब हुआ और बच्चियों ने विभिन्न समूहों की सूरत में दुआइया नज़्में और गीत प्रस्तुत किए। हुज़ूर

अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अज़ राहे शफ़क़त बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ ले आए जहां लोकल मज्लिस-ए-आमला के सदस्य और अन्य जमाअती अधिकारियों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। इस मध्य समस्त बच्चे मस्जिद के बाहरी सेहन में एक लाइन में खड़े हो चुके थे। हुज़ूर अनवर ने अज़ राह शफ़क़त समस्त बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाएं। अब यहां से प्रस्थान का समय क़रीब था। बच्चे और बच्चियां मस्जिद के बाहरी गेट से बाहर खड़े अलविदाई दुआइया नज़्में पढ़ रहे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और सात बजकर बीस मिनट पर यहां से कार्बन (Karben) शहर के लिए प्रस्थान हुई।

8 जून 2014 ई. दिन इतवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ने सुबह चार बजकर बीस मिनट पर पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी जाए रिहायश पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और पत्र और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायात से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रहे।

प्रोग्राम के अनुसार ग्यारह बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

दो मेहमान हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मिलने के लिए आए हुए थे। उनमें से एक Mr. Stefan Hoesel हैं जो कोलोन यूनीवर्सिटी में Educational Science में Ph.D कर रहे हैं उन्हें अपनी शिक्षा के सिलसिला में जमाअत से परिचय हुआ वह उस समय नौजवानों के नज़रिया से संसार में धर्म की आवश्यकता पर जाँच पड़ताल कर रहे हैं। दूसरे Dr. Nils Koebel थे जो माइनज़ यूनीवर्सिटी में पढ़ाने के साथ-साथ अपनी Post Doctoral डिग्री कर रहे हैं। यह अपनी जाँच पड़ताल धर्म में अख़लाक़ी इक़दार के बारे में कर रहे हैं। एक बजकर पाँच मिनट पर इन दोनों लोगों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हुई । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उनसे इस बातचीत फरमाई।

बिना धर्म के अख़लाक़ी इक़दार की कोई एहमीयत नहीं और इसी लिए अल्लाह तआला अपने अम्बिया को अवतरित फ़रमाता रहा है ता वे इन अख़लाक़ी इक़दार को ज़िंदा रखें। इसी लिए तो विभिन्न लोगों ने एक ही संदेश दिया है और अल्लाह तआला ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस ज़माना का मसीह-ओ-मह्दी बनाकर भेजा ता हक़ीक़ी इस्लाम से दूर भटके हुए मुस्लमानों की इस्लाह करें।

Stefan साहब ने इस बात का प्रकटन किया कि अख़लाक़ धर्म के बिना भी हो सकते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हाँ हो सकते हैं परन्तु वह बहुत महिदूद होते हैं और जो होते हैं वह भी बहरहाल धर्म के अधीन ही होते हैं। इस ज़िमन में हुज़ूर अनवर ने माओज़े तंग की उदाहरण दी कि एक पाकिस्तानी मिनिस्टर उनको China में मिला और उनसे पूछा कि ऐसे आला दर्जा की अख़लाक़ी इक़दार किस तरह अपनाएं हैं। कहाँ से ये अख़लाक़ लिए हैं। माओज़े तंग ने यह उत्तर दिया कि वापस अपने मुल्क जाओ और क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवन का अध्ययन करो तो आला दर्जा के अख़लाक़ी इक़दार को अपना सकोगे।

हुज़ूर अनवर ने मेहमान के एक और प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया कि यहूदियत और ईसाइयत की शिक्षा बहुत मिलती जुलती है परन्तु फिर इन दोनों के मानने वालों में बहुत से मतभेदों पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त असल मुश्किल यह है कि शिक्षा तो है परन्तु इस पर अनुकरण नहीं। उदाहरण के लिए उन्हें यह आदेश है कि जिसने एक जान को क़तल किया तो उसने मानो सारे जहां को क़तल कर डाला। परन्तु इस पर कौन कहाँ अनुकरण कर रहा है। यही मामले मुस्लमानों के हाँ है। इसी लिए इस ज़माना में अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उस्वा को ज़िंदा करने के लिए जमाअत अहमदिया के संस्थापक को भेजा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने उन्हें इस सिलसिला में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तसनीफ़ "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" का अध्ययन करने की हिदायत फ़रमाई। जिसके बारे में मेहमानों ने बताया कि उन्हें यह पुस्तक आरंभ में ही दी गई थी और उसे उन्होंने बीच बीच में से पढ़ा भी है इस पर हुज़ूर अनवर ने उन्हें पूरी तरह पढ़ने के लिए कहा।

Dr. Nils Koebel ने अत्यधिक मुहब्बत के साथ हुज़ूर अनवर की सेवा में फूलों का और चॉकलेट का भेंट प्रस्तुत किया। जिसे हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक स्वीकार फ़रमाया और शुक्रिया अदा किया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक इन दोनों मेहमानों को क़लम प्रदान फ़रमाए। अंत में दोनों मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। ये मुलाक़ात एक बज कर बीस मिनट तक जारी रही। ये दोनों मेहमान हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद अत्यधिक जज़बाती थे। ख़ुशी से उनके चेहरे तमतमा रहे थे और बार-बार इस बात का प्रकटन करते थे कि उन्हें विश्वास नहीं कि इतनी बड़ी हस्ती ने उन्हें मुलाक़ात का सौभाग्य बख़्शा है और बड़ा समय दिया है और बातचीत की है। उन्होंने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई। एक साहब ने यह तस्वीर प्रिंट करवाकर अपने दफ़्तर में लगाई भी है।

इन्फ़िरादी और फ़ैमिली मुलाक़ातें

इसके बाद फ़ैमिली मुलाक़ातों का प्रोग्राम जारी रहा। आज सुबह के इस सैशन में संपूर्णता 24 फ़ैमिलीज़ के 99 लोग और इसके अतिरिक्त 50 सिंगल लोग अर्थात कुल 149 लोग ने अपने प्यारे आक़ा के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। प्रत्येक ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ निमंलिखित जमाअतों से आई थीं कुछ फ़ैमिलीज़ बड़ी लम्बी यात्रा कर के यहां पहुंची थीं।

Marburg, Kranichstein, Usingen, Fulda, Bensheim, वेज़दबान, मंहायमBad Nauheim, Eichworms, Klein Gerau, Nidda डारमस्टडWabern, Bielefeld, Soest, Riedstapt, Oberusel Mainz, Olpeरुसल हाइम,Hannover, Hanau, Dreieich, Duren.

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा दो बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

वक्फे नौ बच्चों और बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लासेज़।

आज पिछले-पहर वक्फे नौ बच्चों और वाकिफ़ात नौ बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लासिज़ का प्रोग्राम था इन क्लासिज़ का आयोजित होना मस्जिद के पुरुषों के हाल में किया गया।

छः बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वाकफ़ीन नौ बच्चों की क्लास में पधारे। क्लास का विषय हस्ती बारी तआला रखा गया था।

प्रोग्राम का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। जो प्रिय दानियाल अहमद दाऊद ने प्रस्तुत की और इसका उर्दू अनुवाद प्रिय तलहा अहमद ने प्रस्तुत किया। इसके बाद अल्लाह तआला के सिफ़ाती नामों पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक हदीस प्रिय फ़हीम अहमद ने प्रस्तुत की और साथ-साथ इसका उर्दू अनुवाद प्रिय अली फ़राज़ ने पढ़ कर सुनाया।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सिफ़ात के अनुवाद में से कुछ ऐसे हैं जिनकी इन बच्चों को समझ ही नहीं आ सकती। उनको जर्मन में बताते तो ज़्यादा समझ आती। उर्दू सिखानी है तो छोटी छोटी बातों से सिखाएँ और जो मुश्किल बातें हैं वह उनको उनकी भाषा में सिखाएँ।

इसके बाद प्रिय महमूद अदीब ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निमंलिखित इक़तेबास प्रस्तुत किया :

"आओ मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह अलीम है क्योंकि मैं एक इन्सान होने के कारण से ज्ञान का मिल नहीं रखता परन्तु ख़ुदा मुझे कहता है कि ये चीज़ियों पर प्रकट होगी और फिर अतिरिक्त हज़ारों पर्दों के पीछे मस्तूर होने के अंततः वह चीज़ इसी तरह प्रकट होती है जिस तरह ख़ुदा ने कहा था। आओ और इस की परीक्षा

शेष पृष्ठ 12 पर

पृष्ठ 2 का शेष

(मिदाराजुन नब्वः अनुवादक भाग 2 पृष्ठ 481 मुद्रित ज़ियाउल-क़ुरआन पब्लिकेशन लाहौर)

बहरहाल लिखा है कि उसने अपना नाम रहमानुल यमन रखा जैसे मुसैलमा ने अपना नाम रहमानुल यमन रखा था। उसने यह भी कहा कि उस पर वह्यी आती है और उसे दुश्मनों के तमाम मन्सूबों का इलम समय से पूर्व हो जाता है।

(सीरत सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ अबू नसर अनुवादक पृष्ठ 571)

असवद जादूगर था और लोगों को अलग अलग जादू दिखाता था।

(अल् कामिल फिल तारीख़ लाबन असीर भाग 2 पृष्ठ 201 वर्णन اخبار الاسود العنسی بالیمن दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को स्वप्न में पहले से ही बता दिया गया था कि दो झूठे नबुव्वत का दावा करने वाले निकलेंगे इसलिए हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो हदीस वर्णन करते हैं कि

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيْتُ بِخَزَائِنِ الْأَرْضِ، فَوُضِعَ فِيْ كَفَّيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ، فَكَبُرَا عَلَيَّ، فَأُوْحِيَ اللّٰهُ إِلَيَّ أَنِ انْفُخْهُمَا، فَنَفَخْتُهُمَا فَذَهَبَا، فَأَوَّلْتُهُمَا الْكَذَّابَيْنِ اللَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا، صَاحِبَ صَنْعَاءَ، وَصَاحِبَ الْيَمَامَةِ

(सही बुख़ारी किताब अल्-मग़ाज़ी बाब वफ़द बनी हनीफ़ रिवायत नंबर : 4375)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस दौरान कि मैं सोया हुआ था स्वप्न में मुझे ज़मीन के खज़ाने अता किए गए और मेरे हाथ में दो सोने के कड़े रखे गए तो मुझ पर गिरां गुज़रा। इस पर अल्लाह तआला ने मुझे वह्यी की कि मैं इन दोनों पर फूंक मारूं। मैं ने उन पर फूंक मारी तो वे ग़ायब हो गए। मैं ने इस से मुराद दो झूठे लिए जिनके दरमयान में हूँ। صنعاء والاسود عنسی یمامه والامسیلمه کذّاب

बुख़ारी में ही एक और रिवायत है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वप्न बताया गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं सोया हुआ था कि मुझे दिखाया गया कि मेरे दोनों हाथों पर दो सोने के कड़े रखे गए हैं जिस पर मैं घबरा गया और उनको बुरा जाना। मुझे कहा गया तो मैं ने इन दोनों पर फूंक मारी तो वह उड़ गए अर्थात अल्लाह की तरफ़ से कहा गया। मैं ने उनकी ताबीर की कि दो झूठे हैं जो मेरे ख़िलाफ़ निकलेंगे। रावी अबैदुल्लाह ने कहा कि इन दो में से एक तो अनसी था जिसे यमन में फ़िरोज़ ने क़तल किया और दूसरा मुसैलमा कज़्ज़ाब।

(सही अल् बुख़ारी किताब अल्-मग़ाज़ी बाब किस्सतुल असवद अनसी हदीस 4379)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ईरानी बादशाह किस्रा को दावत-ए-इस्लाम का पत्र लिखा तो उसने ग़ज़बनाक हो कर अपने अधीन आमिल-ए-यमन बाज़ान कुछ उस का नाम बदहान भी वर्णन करते हैं, उसको हुक्म दिया कि वह इस शख़्स का यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सिर ले कर दरबार में पहुंचे। बाज़ान ने दो आदमी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ रवाना किए परन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे अल्लाह ने मुझे बताया है कि तुम्हारे बादशाह को उसके बेटे शीरवे ने हलाक कर दिया है और उसकी जगह ख़ुद बादशाह बन बैठा है।

और साथ ही बाज़ान को दावत-ए-इस्लाम दी और फ़रमाया कि अगर वह इस्लाम क़बूल कर लेगा तो उसे बदस्तूर यमन का हाकिम रखा जाएगा। यह सुनकर दोनों व्यक्ति वापस चले गए। बाज़ान को सारी बात बताई और इसी दौरान बाज़ान को यह ख़बर भी मिल गई कि सच में ऐसा हुआ कि किसरा को उसके बेटे शीरव्यया ने हलाक कर दिया है और उसकी जगह ख़ुद बादशाह बन गया है। बाज़ान ने जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस बात को पूरा होते देख लिया तो उसने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दावत-ए-इस्लाम क़बूल कर ली और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे हाकिम यमन बरक़रार रखा।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु (अनुवादक) मोहम्मद हुसैन हैकल, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 117-118)

इस पत्र के बारे में और दावत-ए-इस्लाम के बारे में और जो किसरा ने कहा था उसके बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी एक जगह लिखा है। कहते हैं कि "अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब मैं किसरा के दरबार में पहुंचा तो मैं ने अंदर आने की इजाज़त तलब की जो दी गई। जब मैं ने बढ़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़त किसरा के हाथ में दिया तो उसने अनुवादक को पढ़ कर सुनाने का हुक्म दिया। जब अनुवादक ने इस का अनुवाद पढ़ कर सुनाया तो किसरा ने ग़ुस्सा से ख़त फाड़ दिया। जब अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा ने यह ख़बर आकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

किसरा ने जो कुछ हमारे ख़त के साथ किया ख़ुदा तआला उसकी बादशाहत के साथ भी ऐसा ही करेगा।

किसरा की इस हरकत का बायस यह था कि अरब के यहूदियों ने इन यहूदियों के ज़रीया से जो रुम की हुकूमत से भाग कर ईरान की हुकूमत में चले गए थे और बाव्जाह रूमी हुकूमत के ख़िलाफ़ साज़िशों में किसरा का साथ देने के किसरा के बहुत मुँह चढ़े हुए थे, किसरा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ बहुत भड़का रखा था। जो शिकायतें वे कर रहे थे इस ख़त ने किसरा के ख़्याल में उनकी तसदीक़ कर दी और उसने ख़्याल किया कि यह शख़्स मेरी हुकूमत पर नज़र रखता है।" अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसरा की हुकूमत पर नज़र रखते हैं यह उस का ख़्याल था। "इसलिए इस ख़त के तुरंत बाद किसरा ने अपने यमन के गवर्नर को एक चिट्ठी लिखी जिसका मज़मून यह था कि क़ुरैश में से एक शख़्स नबुव्वत का दावा कर रहा है और अपने दावों में बहुत बढ़ता चला जाता है। तो फ़ौरन उसकी तरफ़ दो आदमी भेजें जो उसको पकड़ कर मेरी ख़िदमत में हाज़िर करें। इस पर बाज़ान ने जो उस वक़्त किसरा की तरफ़ से यमन का गवर्नर था एक फ़ौजी अफ़्सर और एक सवार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ भिजवाए और एक ख़त भी आपकी तरफ़ लिखा कि आप इस ख़त के मिलते ही फ़ौरन उन लोगों के साथ किसरा के दरबार में हाज़िर हो जाएं। वह अफ़्सर पहले मक्का की तरफ़ गया। तायफ के क़रीब पहुंच कर उसे मालूम हुआ कि आप' सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम "मदीना में रहते हैं। इसलिए वह वहां से मदीना गया। मदीना पहुंच कर उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि किसरा ने बाज़ान गवर्नर यमन को हुक्म दिया है कि आपको पकड़ कर उसकी ख़िदमत में हाज़िर किया जाए। अगर आप इस हुक्म का इन्कार करेंगे तो वह आपको भी हलाक करदेगा और आपकी क़ौम को भी हलाक कर देगा और आपके देश को बर्बाद कर देगा। इस लिए आप ज़रूर हमारे साथ चलें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसकी बात सुनकर फ़रमाया। अच्छा कल फिर तुम मुझसे मिलना। रात को आपने अल्लाह तआला से दुआ की और ख़ुदा तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी कि किसरा की गुस्ताख़ी की सज़ा में हमने उसके बेटे को उस पर मुसल्लत कर दिया है

इसलिए वह उसी साल जमादील ऊला की दसवीं तारीख़ पीर के दिन उसको क़तल कर देगा और कुछ रिवायात में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज की रात उसने उसे क़तल कर दिया है मुम्किन है वह रात वही दस जमादील ऊला की रात हो। जब सुबह हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन दोनों को बुलाया और उनको इस भविष्यवाणी की ख़बर दी। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बाज़ान की तरफ़ ख़त लिखा कि ख़ुदा तआला ने मुझे ख़बर दी है कि किसरा अमुक तारीख़ अमुक महीने क़तल कर दिया जाएगा। जब यह ख़त यमन के गवर्नर को पहुंचा तो उसने कहा अगर यह सच्चा नबी है तो ऐसा ही हो जाएगा अन्यथा उसकी और उसके मलिक की ख़ैर नहीं। थोड़े ही अरसे के बाद ईरान का एक जहाज़ यमन की बंदरगाह पर आकर ठहरा और गवर्नर को ईरान के बादशाह का एक ख़त दिया जिसकी मोहर को देखते हुए यमन के गवर्नर ने कहा। मदीना के नबी ने सच कहा था। ईरान की बादशाहत बदल गई और इस ख़त पर एक और बादशाह की मोहर है। जब उसने ख़त खोला तो उस में यह लिखा हुआ था कि बाज़ान गवर्नर यमन की तरफ़ ईरान के किसरा शीरवय्या की तरफ़ से यह ख़त लिखा जाता है। मैं ने अपने बाप पूर्व किसरा को क़तल कर दिया है इस लिए कि उसने मुल्क में ख़ूँरेज़ी का दरवाज़ा खोल दिया था और देश के शरिफों को क़तल करता था और रियाया पर ज़ुलम करता था। जब मेरा यह ख़त तुम तक पहुंचे तो फ़ौरन तमाम अफ़िसरों से मेरी इताअत का इक़रार लो और इस से पहले मेरे बाप ने जो अरब के एक नबी की गिरफ़्तारी का हुक्म तुम को भिजवाया था उस को खंडित समझो। यह ख़त पढ़ कर बाज़ान इतना प्रभावित हुआ कि उसी वक़्त वह और उसके कई साथी इस्लाम ले आए और उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपने इस्लाम की इत्तिला दे दी।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 317 से 319) दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन में यह तफ़सील हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखी है।

जब बाज़ान का इंतिक़ाल हो गया तो उसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने उमरा को यमन के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों पर आमिल मुक़र्रर फ़रमाया और मुआज़ बिन जबल यमन और हज़र मौत के उन समस्त इलाक़ों के मुअल्लिम थे। इसलिए वह इन सब मुक़ामात का दौरा करते रहते थे। असवद जो कि एक काहिन था और यमन के दक्षिणी हिस्सा में रहता था उसने जादूगरी और सुसज्जित और सुशोभित बातों की वजह से बहुत जल्द लोगों की तवज्जा अपनी तरफ़ खींच ली और उसने नबुव्वत का दावा भी कर दिया। वे लोगों पर यह ज़ाहिर करता कि उसके पास एक फ़रिश्ता आता है जो हर बात उसको बता देता है और उसके दुश्मनों के मंसूबे और राज़ फ़ाश कर देता है जिस पर सादा और जाहिल लोगों की बहुत बड़ी संख्या उसके पास इकट्ठी हो गई। दरअसल उस एनसी ने यह नारा भी लगाया कि यमन सिर्फ़ यमनियों का है तो यमन के बाशिंदे क़ौमीयत के इस नारे से बहुत प्रभावित हुए। यह नारा बड़ा पुराना है आज भी यही प्रयोग होता है और दुनिया में जो फ़साद फैला हुआ है उसी वजह से है। बहरहाल क्योंकि यमन में इस्लाम अभी पूरी तरह लोगों में रासिख़ नहीं हुआ था इसलिए उन लोगों ने अजनबी तसल्लुत से आज़ाद होने के लिए उसकी क़ौमीयत के नारे पर लब्बैक कहा और उसके साथ मिल गए।

जब यह कष्टदायक सूचना मदीना पहुंचीं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ज़व-ए-मौअता के शहीदों का बदला लेने और पूर्वी जानिब से हमलों की रोक-थाम के लिए हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर की तैयारियों में व्यस्त थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यमन के सरदारों के नाम संदेश भेजा कि वह अपने तौर पर इसका मुक़ाबला जारी रखें और जूंही उसामा का लश्कर विजय हो कर लौटेगा तो उसे यमन की जानिब रवाना कर दिया जाएगा।

(अल् कामिल फिल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 201 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

(सीरत सय्यदना हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ अबू नसर अनुवादक पृष्ठ 571)

असवद अनसी की फ़ौज में सात सौ घुड़सवार थे। उसने बड़ी फ़ौज बनाई थी और ऊंट सवार उसके इलावा थे। बाद में उसकी ताक़त मज़बूत होती गया। क़बीला मुज़हिज में इस का क़ायम मक़ाम अम्र बिन मादी करब यमन का मशहूर घोड़े सवार था। अम्र बिन मादी क़र्ब यमन का मशहूर घोड़े सवार था, कवि था और वक्ता था। उस का उपनाम अबू सूर था। दस हिज्री में उसने अपने क़बीला बनू ज़ुबैद के वफ़द के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल किया था। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद यह मुर्तद हो गया लेकिन बाद में फिर हक़ की तरफ़ रुजू कर लिया और जंग-ए- क़ादसिया में कारहाए नुमायां अंजाम दिए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के आख़िरी दिनों में उस का देहांत हुआ।

(अल् कामिल फिल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 202- 166 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

(तारीख़ अदब अरबी अनुवादक पृष्ठ 67-68 मुद्रित ग़ुलाम अली प्रिंटर्ज़ लाहौर)

बहरहाल लिखा है कि असवद अनसी ने पहले अहल-ए-नजरान पर हमला करके हज़रत अम्र बिन हज़म रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत ख़ालिद बिन सईद रज़ियल्लाहु अन्हु को वहां से निकाल दिया। इस के बाद उसने सिनान पर चढ़ाई की। वहां हज़रत शहर बिन बाज़ान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसका मुक़ाबला किया लेकिन वे शहीद हो गए। हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु इन दिनों सना में ही थे परन्तु इस सूरत-ए-हाल के पेश-ए-नज़र हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास मारिब चले गए जहां से वे दोनों हज़र मौत चले गए। इस तरह असवद अनसी यमन के समस्त इलाक़े पर क़ाबिज़ हो गया। असवद अनसी ने हज़रत शहरिब बाज़ान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत के बाद उनकी बीवी से ज़बरदस्ती शादी भी कर ली थी जिसका नाम "मरज़ुबान" या बाअज़ कुतुब के अनुसार "आज़ाद" था। इसी समय में हज़र मौत और यमन के मुस्लमानों की तरफ़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़त पहुंचा जिसमें उनको असवद अनसी के साथ जंग करने का हुक्म दिया गया था। इसलिए इस उद्देश्य के लिए हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और इस से मुस्लमानों के दिल मज़बूत हो गए। जिशनश देलमी कहते हैं कि वबर् बिन युह्न्निस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़त लेकर हमारे पास आए। जिशनस देलमी का नाम बाअज़ जगह जुशेश देलमी वर्णन हुआ है। बहरहाल यह उन लोगों में से थे जिन्हें नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने असवद अनसी के क़तल के लिए यमन में ख़त लिखा था और उन्होंने फ़िरोज़ और दाज़ोविया के साथ मिलकर उसे क़तल किया था।

(अल् कामिल फिल तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 201- 202 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

(ओसोदुल ग़ाबा भाग 1 पृष्ठ 535 भाग 2 पृष्ठ 643 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

(मदारिज अल् नबूव्वत भाग 2 पृष्ठ 474 शब्बीर बिरादर्ज़ लाहौर 2004 ई.)

वबर् बिन यहंनिस का नाम वबरा बिन यहंनिस भी वर्णन हो है। वह अबनाए यमन में से थे और दस हिज्री में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल किया था। वह वर्णन करते हैं कि इस ख़त में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें हुक्म दिया था कि हम अपने दीन पर क़ायम रहें और लड़ाई या हीले से असवद के ख़िलाफ़ जंगी कार्रवाई करें तथा हम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को उन लोगों को भी पहुंचाएं जो उस वक़्त इस्लाम पर रासिख़ हों और दीन की हिमायत के लिए आमादा हों। हमने अमल किया परन्तु हमने देखा कि इस के ख़िलाफ़ कामयाब होना बहुत कठिन है।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 248 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

(तबक़ातुल कुबरा भाग 6 पृष्ठ 62-63 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2017 ई.)

(ओसोदुल गाबा भाग 5 पृष्ठ 408 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2016 ई.)

जिशनस देलमी वर्णन करते हैं कि हमें एक बात मालूम हुई कि असवद और केस बिन अब्दे यागूस के मध्य कुछ उपद्रव करने वाले पैदा हो चुकी है। आपस में फूट पड़ गई है या कम से कम कुछ रंजिशें पैदा हो गई हैं इसलिए हमने सोचा कि केस को अपनी जान का ख़तरा है।

केस बिन अब्दे यागूस के नाम और नसब के बारे में इख़तेलाफ़ है। एक कथन के अनुसार उस का नाम हुबेरा बिन अब्दे यागूस था और यह भी कहा गया है कि अब्दे यागूस बिन हुबेराथा। बहरहाल अबू मूसा का कहना है कि यह केस बिन अब्दे यागूस बिन मकशू थे। एक क़ौल के अनुसार यह सहाबी नहीं थे जबकि दूसरे कथन के अनुसार उनको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत करने का एज़ाज़ हासिल है। यह असवद अनसी को क़तल करने वालों में शामिल थे और अमर बिन मादी करब के भांजे थे। यह यमन में मुर्तद होने वालों में से थे लेकिन बाद में इस्लाम की तरफ़ लौट आए और फ़तह इराक़ और क़ादसिया की जंग में इन का बहुत नुमायां नाम आता है। यह जंग निहावनद में शरीक थे और जंगे सिफफीन में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की उपस्थिति में शहीद हुए। जिशनस देलमी कहते हैं कि हमने केस को इस्लाम की दावत दी और उसको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पैग़ाम पहुंचाया तो उसे ऐसा महसूस हुआ कि गोया हम आसमान से उतरे हैं। इसलिए उसने फ़ौरन हमारी बात मान ली और उसी तरह हमने दूसरे लोगों के साथ भी ख़त-ओ-किताबत की। मुख़्तलिफ़ क़बायली सरदार भी उस के मुक़ाबले के लिए तैयार हो चुके थे। उन्होंने हमसे ख़त के ज़रीया मदद का वादा किया। हमने जवाब में लिखा कि जब तक हम आख़िरी फ़ैसला करके उनको जवाब न दें वे अपनी जगह से हरकत न करें क्योंकि

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम के मौसूल होने की वजह से इस के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना ज़रूरी हो गया था। इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजरान के समस्त बाशिंदों कवास के मामले के विषय में लिखा था।

उन्होंने आपकी बात मान ली। जब यह इत्तिला असवद अनसी तक पहुंची तो उसे अपनी हलाकत नज़र आने लगी। जिशनस देलमी कहते हैं कि मुझे एक तरकीब सूझी। मैं असवद की बीवी आज़ाद के पास गया जो शहरिब बिन बाज़ान की विधवा थी और उस से असवद ने शहरिब बिन बाज़ान को क़तल करने के बाद शादी कर ली थी। मैंने उसे असवद के हाथों उसके पहले पति हज़रत शहरिब बिन बाज़ान की शहादत, उस के ख़ानदान के अन्य लोगों की हलाकत और ख़ानदान को पहुंचने वाला अपमान और मज़ालिम याद दिलाए और उसे उसके ख़िलाफ़ अपनी मदद के लिए कहा तो वह बड़ी ख़ुशी से तैयार हो गई और उसने कहा कि बख़ुदा मैं इसको अल्लाह की तमाम मख़लूक़ में सबसे बुरा समझती हूँ। यह अल्लाह के किसी हक़ का एहतेराम नहीं करता और न अल्लाह की किसी हराम करदा वस्तु से दूरी करता है। अतः जब तुम्हारा इरादा हो मुझे अवगत करना। मैं इस मुआमला की तदबीर करूँगी और आख़िरकार एक मुकम्मल मंसूबा बंदी के साथ असवद अनसी की उसी बीवी की ताईद के साथ असवद अनसी को एक रात उसके महल में दाख़िल हो कर क़तल कर दिया गया और जब सुबह हुई तो क़िला की दीवार पर खड़े हो कर इस इमतियाज़ी निशान के साथ आवाज़ लगाई गई कि मुर्तद बाग़ी उस अपने अंजाम को पहुंच चुका है तो मुस्लमान और काफ़िर क़िला के इर्द-गिर्द जमा हो गए। फिर उन्होंने सुबह की अज़ान दी और कहा اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللهِ अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अलैहिस्सलाम अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। असवद अनसी झूठा है फिर उसका सिर उन लोगों के सामने फेंक दिया। इस तरह यह फ़ित्ना तीन माह तक और एक कथन के मुताबिक़ चार माह के क़रीब भड़क कर ठंडा हो गया।

और समस्त उम्माल और उमरा इत्यादि अपने अपने इलाक़ों में हसब-ए-मामूल अपने कार्य में व्यस्त हो गए और हज़रत मआज़ बिन जबल उन लोगों की इमामत कराते थे। असवद अनसी के क़तल, उस की फ़ौज की शिकस्त और इसके फ़ित्ने के इख़ततताम की ख़बर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब भेजी गई तो इस से पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहान्त हो चुका था। यह भी रिवायत है कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देहान्त से पूर्व असवद अनसी के क़तल की ख़बर बज़रीया वह्यी उसी रात दे दी थी जिस रात वह क़तल हुआ था। इसलिए आपने अगली सुबह इस की इत्तिला सहाबा को भी दे दी और यह भी बता दिया कि उसे फ़िरोज़ ने क़तल किया है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़िलाफ़त के मन्सब पर फ़ायज़ होने के बाद मिलने वाली सबसे पहली ख़ुश-ख़बरी असवद अनसी के क़तल की ख़बर थी। इस के क़तल की ख़बर जिस रात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची उसकी सुबह को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हो गया और एक रिवायत के मुताबिक़ जब उसके क़तल की ख़बर लाने वाला मदीना आया तो उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दफ़न किया जा रहा था और एक रिवायत यह है कि उस के क़तल की ख़बर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के दस बारह दिन बाद मदीना पहुंची जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा मुंतख़ब हो चुके थे। इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं लेकिन बहरहाल यह उन्ही दिनों की, आठ दस दिन पहले या बाद की बात है।

इस के क़तल के बाद सिंह-ए-में पहले की तरह मुस्लमानों की हुकूमत क़ायम हो गई।

(उद्धरित अल् आसाब फ़ी तमीज़ अल्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 404-405 दारुल क़ुतुब इल्मिया 2005 ई.)

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारुक़ पृष्ठ 60 मुद्रित जावेद बट प्रैस)

(उद्धरित अल् कामिल फिल तारीख़ लुबनान ले इब्ने असीर भाग 2 पृष्ठ 201 - 204 204 ذکر اخبار الاسود العنسی بالیمن दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2006 ई.)

(सय्यदना अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 301अनुवादक शमीम अहमद ख़लील सलफ़ी)

लेकिन यमन में एक दफ़ा फिर बग़ावत उठी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का जब यमन में चर्चा हुआ तो सुधरते हालात फिर ख़राब हो गए। केस बिन अब्दे यगूस जो फ़िरोज़ और दज़ुविया को मिला कर असवद से बाग़ी हो गया था और जिसने उनके सहयोग से उसको क़तल किया था अब फिर इस्लाम की वफ़ा-दारी से मुनहरिफ़ हो गया। लायक़ और पक्के इरादे वाला आदमी था। क़ौमी असबियत से सरशार था। यमन में फ़ारसियों का इक़तेदार उसे हमेशा से खटकता रहता था। उसके ख़ातमें के बाद वह अबना की ख़ुशहाली और उनकी इजतेमाई और इक़तेसादी बरतरी को ख़ाक में मिलाना चाहता था। एक कामयाब फ़ौजी लीडर वह पहले से था उसने उसके फ़ौजी लीडरों से साज़-बाज़ की और अबना को देश से निकालने की योजना बना ली। फ़िरोज़ और दाज़ूविया दोनों से उसने ताल्लुक़ात ख़राब कर लिए। दाज़ूविया को धोखे से क़तल कर दिया। फ़िरोज़ क़तल होते होते बच गया। फ़िरोज़ ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी और इबना की वफ़ादारी से अवगत करके दरख़ास्त की कि हमारी मदद की जीए। हम इस्लाम के लिए हर क़ुर्बानी करने को तैयार हैं।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरकारी ख़ुतूत अज़ ख़ुरशीद अहमद फ़ारुक़ पृष्ठ 60-61 मुद्रित जावेद बट प्रैस)

लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का देहांत हुआ तो हज़र मौत के इलाक़ों पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आमिल ज़ियाद बिन लबीद थे। हज़रत ज़ियाद बिन लबीद सहाबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु का एक बेटा अब्दुल्लाह था। उक़बा सानिया में सत्तर अस्हाब के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुए और इस्लाम क़बूल किया था। इस्लाम क़बूल करने के बाद जब मदीना वापस आए तो उन्होंने आते ही अपने क़बीले बनू बयाज़ा के बुत तोड़ दिए जो बुतों की पूजा किया करते थे। फिर आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास मक्का चले गए और वहीं मुक़ीम रहे यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना की तरफ़ हिज्रत की तो आपने भी हिज्रत की। इसलिए हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु को मुहाजिर अंसारी कहा जाता है। मुहाजिर भी हुए और अंसारी भी थे। हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ज़वा बदर, अहद, ख़ंदक़ और समस्त ग़ज़वात में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साथ थे। आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिज्रत करके मदीना पहुंचे और क़बीला बनू बयाज़ा के मुहल्ला से गुज़रे तो हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु ने अहलन-व-सहलन कहा और क़ियाम के लिए अपना मकान पेश किया तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी ऊंटनी को आज़ाद छोड़ दो। यह ख़ुद मंज़िल तलाश कर लेगी। मुहर्रम नौ हिज्री में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सदक़ा और ज़कात वसूल करने के लिए अलग-अलग मोह्स्सेलीन निर्धारित फ़रमाए तो हज़रत ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़र मौत के इलाक़े का मोहस्सिल निर्धारित फ़रमाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर तक आप रज़ियल्लाहु अन्हु उसी ख़िदमत पर मामूर रहे। इस पद से हटने होने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कूफ़ा में सुकूनत इख़तेयार कर ली और वहीं इकतालीस हिज्री में वफ़ात पाई।

(अलतबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 302 मुद्रित दारुल अहया तुर्रास अल् अरबी बेरूत 1996 ई.)

(पच्चास सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु, अज़ तालिब हाश्मी पृष्ठ 557 से 559 अल् बदर पब्लिकेशन लाहौर)

फिर हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु की नजरान की तरफ़ रवानगी के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के तशकील करदा ग्यारह लश्करों में से सबसे आख़िर में हज़रत मुहाजिर बिन अबू उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु का लश्कर मदीना से यमन के लिए रवाना हुआ। यमन के साथ मुहाजेरीन और अंसार सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हु का एक दस्ता भी था। यह लश्कर मक्का मुकर्रमा से गुज़रा तो अत्ताब बिन उसेद के भाई ख़ालिद बिन उसैद अमीर मक्का भी साथ हो लिए। जब यह लश्कर तायफ से गुज़रा तो अब्दुर्रहमान बिन अबील आस अपने साथियों समेत इस लश्कर में शामिल हो गए। इसी तरह रास्ते में मुख़्तलिफ़ क़बायल के लोग आपके लश्कर में शामिल होते गए।

(उद्धरित सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी पृष्ठ 305 अनुवादक शमीम अहमद ख़लील सलफ़ी) तो यह काफ़ी बड़ा लश्कर आगे चलता गया।

अम्र बिन मादी कर्ब और केस बिन मकशूह की गिरफ़्तारी के बारे में लिखा है। जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि अम्र बिन मादी कर्ब ने अपनी बहादुरी

और ताक़त के घमंड में इस्लामी हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी थी और केस बिन अब्दे ग़यूस को भी साथ मिला लिया था। ये दोनों हर क़बीले में जाते और उन्हें मुस्लमानों के ख़िलाफ़ भड़का कर बग़ावत का झंडा बुलंद करने पर आमादा करते। नतीजा यह हुआ कि सिवाए नजरान के ईसाई बाशिंदों के जिन्हों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम का वादा किया था और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द में भी अपने वाडे पर बदस्तूर क़ायम रहे, बाक़ी समस्त क़बायल ने अम्र बिन मादी कर्ब का साथ दिया और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उठ खड़े हुए। ख़ुदा की क़ुदरत कि अहल-ए-यमन को जब हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के एक बड़े लश्कर के साथ यमन की तरफ़ आमद की इत्तिलाएं मिलनी शुरू हुईं तो अहल-ए-यमन चिंता में मुबतला हो गए कि वे हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर का सामना करने की ताब नहीं ला सकेंगे ये लोग अभी इसी कैफ़ीयत में थे कि उनके सरदारोँ केस और अम्र बिन मादी कर्ब में फूट पड़ गई और इसके बावजूद कि उन्होंने हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुक़ाबला करने का अह्द किया था वे दोनों एक दूसरे को हानि पहुंचाने की कोशिश में व्यस्त हो गए और आख़िर अम्र बिन मादी कर्ब ने मुस्लमानों के साथ मिल जाने का फ़ैसला किया और एक रात उसने अपने आदमियों के साथ केस की रिहायश गाह पर हमला किया और उसे गिरफ़्तार करके हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने पेश कर दिया लेकिन हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिर्फ केस को ही गिरफ़्तार करने पर बस नहीं किया बल्कि साथ ही अम्र बिन मादी कर्ब को भी क़ैद कर लिया और इन दोनों के हालात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में लिखे और इन दोनों को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में भेज दिया।

केस और अम्र बिन मादी कर्ब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लाए गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने केस से फ़रमाया : क्या तुम अल्लाह के बंदों पर ज़ुलम-ओ-ज़्यादती करते हुए उन्हें क़तल करते रहे हो और तुमने मोमिनीन को छोड़कर मुशरिकों और मुर्तद बाग़ियों को दोस्त बना लिया है। अगर उसका कोई वाज़िह जुर्म मिल जाता तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे क़तल करने का इरादा कर लिया था। केस ने दाज़ुविया के क़तल की साज़िश और इस में शिरकत से साफ़ इन्कार कर दिया और यह ऐसा अमल था कि जो ख़ुफ़ीया तौर पर सरअंजाम दिया गया था और इस बारे में केस के ख़िलाफ़ कोई वाज़ेह सबूत नहीं मिल सका। इसलिए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे चूँकि सबूत कोई नहीं था क़तल करने से आराज़ किया और उस को छोड़ दिया। फिर दूसरे की बारी आई और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अम्र बिन मादी कर्ब से कहा कि तुम्हें रुस्वाई महसूस नहीं होती कि हर-रोज़ तुम शिकस्त खाते हो या तुम्हारे गर्द घेरा तंग हो जाता है। अगर तुम इस दीन की मदद करो तो अल्लाह तुम को बुलंद मुरातिब से नवाज़ेगा। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे भी आज़ाद कर दिया और इन दोनों यानी अम्र और केस को उनके क़बायल के सपुर्द कर दिया। अम्र ने कहा निसंदेह में अब अमीरुल मोमनीन की नसीहत को ज़रूर क़बूल करूँगा और हरगिज़ यह ग़लती दुबारा नहीं करूँगा।

(तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 299 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु (अनुवादक) मोहम्मद हुसैन हैकल, उर्दू अनुवाद पृष्ठ 253-254)

चूँकि वाज़िह सबूत नहीं थे तो दोनों को उनकी सरदारी की वजह से और उनके इलम की वजह से माफ़ कर दिया। इन लोगों की माफ़ी का वर्णन करते हुए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के सम्बन्ध में एक और सीरत निगार ने लिखा है कि

अबू बकर बड़े दूर अंदेश, गहरी दूरदर्शिता के मालिक और समस्त कर्यों के परिणामों पर निगाह रखते थे। जहां सख़्ती की ज़रूरत होती सख़्ती करते। जहां क्षमा की ज़रूरत होती क्षमा से काम लेते।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु क़बायल के बिखरे हुए लोगों को इस्लाम के झंडे तले जमा करने के शौक़ीन थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की हकीमाना सियासत यह थी कि मुख़ालिफ़ क़बायल के लीडरों को हक़ की तरफ़ लौट आने के बाद दरगुज़र कर दिया जाए। जिस वक़्त आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यमन के मुर्तद क़बायल को अधीन क्या उन्हें इस्लामी सलतनत के सतून और ग़लबा और मुस्लमानों की इज़्ज़त और फ़त्हमंदी की क़ुव्वत और उनकी अज़ीमत की पेशक़दमी का मुशाहिदा कराया तो क़बायल ने स्वीकार कर लिया और इस्लामी हुकूमत के ताबे हो गए और ख़लीफ़-ए-रसूल की इताअत क़बूल कर ली। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह मुनासिब समझा कि इन क़बायल के लीडरों के साथ विनम्रता की जाए और सख़्ती की बजाय नरमी और प्रेम का बरताव किया जाए। इसलिए उनसे सज़ाएं उठा लीं। उनसे नरम गुफ़्तगु की और क़बायल के अंदर उनके नफ़ुज़ और असर को इस्लाम और मुस्लमानों की भलाई के लिए प्रयोग किया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी लग़ज़िशों को माफ़ किया। उनके साथ हुस्न-ए-सुलूक से पेश आए। केस बिन अब्दे ग़यूस और अम्र बिन मादी कर्ब के साथ यही बरताव किया। ये दोनों अरब के बहादुरों और अक़लमंदों में से थे। उनको ज़ाए करना अबू बकर को अच्छा न लगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बात की कोशिश की कि उन्हें इस्लाम के लिए ख़ालिस कर लें और इस्लाम और इर्तेदाद के दरमयान तरद्दुद से उनको निकाल बाहर करें। अबू बकर ने अम्र बिन मादी कर्ब को रिहा कर दिया। फिर उस दिन के बाद अम्र कभी मुर्तद नहीं हुआ बल्कि इस्लाम क़बूल किया और अच्छी तरह मुस्लिम बन कर ज़िंदगी गुज़ारी। अल्लाह ने उस की मदद की और उसने इस्लामी फ़ुतूहात में अहम किरदार अदा किया। केस भी अपने किए पर नादिम हुआ। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे भी माफ़ कर दिया। अरब के इन दोनों सूरमाओं को माफ़ कर देने से बड़े दूर रस असरात मुरत्तिब हुए। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह उन लोगों के दिलों को जोड़ा जो इर्तेदाद के बाद ख़ौफ़ या लालच में इस्लाम की तरफ़ वापस हुए और आपने अशअत बिन केस को माफ़ कर दिया। इस तरह सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनके दिलों को कैद किया और उनके दिलों के मालिक बन बैठे और भविष्य में ये लोग इस्लाम की नुसरत और मुस्लमानों की क़ुव्वत का माध्यम बने।

(अली मोहम्मद सलाबी, उर्दू अनुवाद सफ़ा 313-314) यानी कोई ज़बरदस्ती नहीं थी बल्कि दिल से उन्होंने इस्लाम क़बूल किया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की इताअत की।

हज़रत मुहाजिर नजरान से लह्जिया इलाक़े की तरफ़ रवाना हुए और जब घुड़सवारों ने उन लोगों के गिरोह को घेर लिया तो उन्होंने अमान की दरख़ास्त की परन्तु मुहाजिर ने उनको अमान देने से इन्कार कर दिया। इस पर लोग दो गिरोहों में तक़सीम हो गए। उनमें से एक गिरोह से हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु का अजीब मुक़ाम पर मुक़ाबला हुआ। अजीब जो है यह यमन में एक जगह है। हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के अन्य घुड़सवारों ने हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत में अख़ाबिस् के रस्ते में इन लोगों का मुक़ाबला किया और भागने वाले दुश्मन हर रस्ते पर क़तल किए गए।

(तारीख़ अलतिबरी भाग 2 पृष्ठ 299 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

(मोअज्जमुल बुल्दान भाग 4 पृष्ठ : 99)

यमन के इलाक़े अलाब में बनू अक ने जब बग़ावत की तो उन्हें अक्खाबस का नाम दिया गया और जिस रास्ते पर उन बद बातिन और ख़बीस फ़िरक़त लोगों से जंग हुई उसे बाद में तरीकुल अखाबिस का नाम दिया गया।

(उद्धरित तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 294-295 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत मुहाजिर रज़ियल्लाहु अन्हु के सना पहुंचने के बारे में लिखा है कि हज़रत मुहाजिर अजीब से रवाना हुए यहां तक कि सिना पहुंच गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने भागने वाले मुतफ़र्रिक़ क़बायल का पीछा करने का हुक्म दिया। मुस्लमानों ने उनमें से जिस पर क़ाबू पाया उसे अच्छी तरह क़तल किया और किसी सरकश को माफ़ नहीं किया गया। जबकि सरकशों के इलावा जिन्हों ने तौबा की उन लोगों की तौबा क़बूल की गई। जो जंग करने वाले थे, ज़ुलम करने वाले थे उनको तो माफ़ नहीं किया लेकिन बाक़ीयों को माफ़ कर दिया और उनके पिछले हालात के मुताबिक़ उनसे सुलूक किया गया और उनकी तरफ़ से इस्लाह की उम्मीद थी।

(तारीख़ तिबरी भाग 2 पृष्ठ 299 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.)

अगला वर्णन कुछ तफ़सीली था इसलिए यह वर्णन यहीं बंद करता हूँ। बाक़ी इन शा अल्लाह आइन्दा वर्णन होगा।

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 11 August 2022 Issue No. 32

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

पृष्ठ 07 का शेष

करलो। मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह क़दीर है क्योंकि मैं इंसान होने के कारण क़ुदरत-ए-कामला नहीं रखता परन्तु ख़ुदा मुझे कहता है कि मैं अमुक काम इस तरह पर करूँगा। और वह काम इन्सानी ताक़त से इस तरह पर नहीं हो सकता और इसके रास्ते में हज़ारों रोकें हायल होती हैं परन्तु फिर भी वह इसी तरह हो जाता है जिस तरह ख़ुदा तआला फ़रमाता है। आओ और इस की परीक्षा कर लो।

मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह समीअ है और अपने बंदों की दुआओं को सुनता है। क्योंकि मैं ख़ुदा से ऐसे कामों के सम्बन्ध में दुआ मांगता हूँ जो वास्तव में बिल्कुल असम्भव नज़र आते हैं परन्तु ख़ुदा मेरी दुआ से उन कामों को पूरा कर देता है। आओ और इस की परीक्षा कर लो मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह नसीर है। क्योंकि जब उसके नेक बंदे चारों ओर से मसायब और अदावत की आग में घर जाते हैं तो वह अपनी नुसरत से स्वयं उनके लिए मख़लेसी का रस्ता खौलता है। आओ और इस की परीक्षा कर लो।

मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह स्रष्टा है क्योंकि मैं इन्सान होने के कारण ख़लक़ की ताक़त नहीं रखता परन्तु वह मेरे माध्यम अपनी ख़ालक़ीयत के जल्वे दिखाता है जैसा कि उसने बिना किसी माद्दा के और बिना किसी आला के मेरे कुरते पर अपनी रोशनाई के छींटे डाले। आओ और इस की परीक्षा करलो।

मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह मुकल्लिम है और अपने विशेष बंदों से मुहब्बत और शफ़क़त का कलाम करता है। जैसा कि उस ने मुझ से किया। आओ और इस की परीक्षा कर लो।

मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह ربّ العالمین है और कोई चीज़ उस की रबूबियत से बाहर नहीं। क्योंकि जब वह किसी चीज़ की रबूबियत को छोड़ता है तो फिर वह चीज़ चाहे वह कोई हो क़ायम नहीं रह सकती। आओ और इस की परीक्षा कर लो।

फिर मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि ख़ुदा है और वह मालिक है क्योंकि मख़लूक़ात में से कोई चीज़ उसका आदेश नहीं तौड़ सकता। और वह जिस चीज़ पर जो भी नियंत्रण करना चाहे कर सकता है। अतः आओ कि मैं तुम्हें आसमान पर उसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें ज़मीन पर उसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें हवा पर उसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें पानियों पर उसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें पहाड़ों पर इसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें क़ौमों पर उसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें हुकूमतों परउसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ और आओ कि मैं तुम्हें दिलों पर उसके तसर्रुफ़ात दिखाऊ अतः आओ और परीक्षा ले लो।"

(हमारा ख़ुदा, पृष्ठ 250)

इसके बाद हज़रत नवाब मुबारका बेग़म साहबा रज़ियल्लाहु अन्हा का मंजूम कलाम

मुझे देख तालिब-ए-मुंतज़िर, मुझे देख शक्ल-ए-मजाज़ में
जो ख़ुलूस-ए-दिल की रमक़ भी है तिरे दीदए नयाज़ में

प्रिय काशिफ़ इक़बाल ने सुंदर आवाज़ के साथ प्रस्तुत की

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने क्लास में शामिल बच्चों की संख्या और आयु के हवाला से दरयाफ़त फ़रमाया जिस पर सेक्रेटरी वक़्फ़ नौ ने कहा। पूर्ण जर्मनी से 12 से पंद्रह वर्ष की आयु के तलगभग तीन सौ वाकफ़ीन नौ बच्चे इस क्लास में शामिल हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बच्चों से दरयाफ़त फ़रमाया कि जिनकी जामिया अहमदिया में जाने की इच्छा है वह हाथ खड़ा करें तो इस पर बड़ी संख्या में बच्चों ने अपने हाथ खड़े किए और जामिया अहमदिया में जाने के निर्णय का प्रकटन किया। तो इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह पूरी क्लास चली जाएगी तो फिर जामिया वालों को एक और बलॉक खोलना पड़ेगा। अच्छी बात है माशा अल्लाह अपने इस निर्णय को क़ायम रखें। यह न हो कि जब सैकण्डरी स्कूल कर लो, Gymnasium के बाद Abitur कर लो तो कह दो कि हमारी नीयत बदल गई है। अब हमारा इरादा है कि हम अमुक फ़ील्ड में चले जाएं इस लिए वक़्फ़ करना है सारों ने और फिर जामिया में जाना है तो वक़्फ़ का अर्थ है कि फिर तुम लोगों को जर्मनी छोड़ कर कहीं और भी जाना पड़े तो जाने के लिए तैयार रहो।

इस पर सभी विद्यार्थियों ने एक हो कर कहा कि हम प्रत्येक जगह जाने के लिए तैयार हैं।

प्रश्न : एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि क्या Riel Schuee करने के बाद हम जामिया में दाख़िला ले सकते हैं कि नहीं। यह दसवीं क्लास के बराबर है इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि दसवीं क्लास के बाद यदि तुम क्वालीफ़ाई कर लो और जामिया ने दाख़िला का जो मयार रखा हुआ है तुम इस पर पूरा उतरते हो। यदि तुम्हारी उर्दू ठीक है। तुम्हें क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना आता है, तुम्हें अरबी आती है। तुम्हें नमाज़ आती है, तुम्हें अनुवाद आता है और जामिया के टैस्ट क्वालीफ़ाई कर लेते हो तो ठीक है। परन्तु यहां वालों को जर्मन भाषा भी आनी चाहिए। यदि तुम आबी टूर इत्यादि कर लो तो जर्मन भाषा तुम्हारी अच्छी हो जाती है इस लिए जामिया वाले टूर (Abitur) को प्रेफर करते हैं परन्तु यदि तुम पढ़ाई में अच्छे हो तो दूसरी ज़बानें भी तो सिखाई जा सकती हैं। ज़रूरी तो नहीं कि जितने हाथ खड़े हुए हैं ये सारे मुबल्लिग़ जर्मनी को दिए जाएं। दूसरे मुल्कों में भी जाने हैं। उनको फ्रैंच भी सिखानी है। और फ़िल्मश भी सुखानी है और इंग्लिश भी सिखानी है और दूसरी ज़बानें भी सिखानी हैं। इस लिए यदि क्वालीफ़ाई कर लो तो जामिया में जा सकते हो।

प्रश्न : एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया जब आदमी घर के अंदर बाजमाअत नमाज़ पढ़ा रहा हो और इसके पीछे महिलाए हों तो फिर आदमी ने ही क्यों तकबीर कहनी होती है। महिला क्यों नहीं कह सकती।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यदि पुरुष इमाम के पीछे केवल घर की महिलाए हैं तो वह तकबीर कह सकती हैं

प्रश्न : एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि रमज़ान के रोज़े रखने की आयु कितनी होती है या कब से रोज़े रखने की आज्ञा होती है

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यदि तो सेहत मंद शरीर है तुम्हारी तरह का तो तुम रोज़े रख सकते हो। जब बर्दाश्त कर सकते हो तो रख लो। परन्तु यह जो गरमीयों के रोज़े हैं लंबे होते हैं उनमें विद्यार्थी-ए-को एहतियात करनी चाहिए। हाँ एक दो रोज़े रखकर आदत कर लेनी चाहिए। यदि बर्दाश्त कर सकते हो तो थोड़े थोड़े रोज़े रखकर आदत डाल लेनी चाहिए और यदि परीक्षा इत्यादि हो रहीं हैं तो उनमें बहरहाल एक बोझ पड़ रहा होता है इस लिए इन दिनों में फिर न रखो। परन्तु जब तुम जवान हो गए, सतरह अठारह वर्ष की आयु में बालिग़ हो गए तो फिर तुम्हारे ऊपर कर्तव्य बन ही जाता है।

शेष आगे .....

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
قادیان میں گھر، فلیٹس اور بلڈنگ اُچت قیمت پر تعمیر کروانے کے لیے سمپرک کریں، اسی پرکار قادیان میں اُچت قیمت پر بنے بنائے نئے اور پرانے گھر / فلیٹس اور زمین خریدنے اور Renovation کے لیے سمپرک کریں
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad